04 - नेता बनने की कला

05 - ऋग्वेद में शिल्प, कला और कलाकार

06 - बारिश ने बढ़ाई किसानों की मुश्किलें, कृषि विभाग की...

07 - परदे पर कुछ अलग ही कलाकार थे असरानी

सुबह सवेरे

A Daily News Magazine
भोपाल
रविवार, 26 अक्टूबर, 2025

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 56, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

फुटपाथ पर जीवन...

फोटो: गिरीश शर्मा

सुप्रभात

अगर
उसने तुम्हें चीख-चीख कर
यह नहीं बताया कि
वह एक अच्छा आदमी है
तो
इसका अर्थ यह नहीं है कि
तुम उसे एक बुरा आदमी समझ लो

और न केवल समझ लो
बल्कि उसे प्रचारित भी करो,
अपनी कुंठा का वमन करो।
सबसे कहो-
अगर वह अच्छा होता
तो क्या एक बार भी नहीं कहता
कि वह अच्छा आदमी है

ख़ैर! जैसा कि तय है
तुम्हारे शब्द जीत जायेंगे,
तुम्हारा वाक-चातुर्य उसके मौन पर भारी पड़ेगा
और वह रह जाएगा वैसे ही चुप-
मुस्कुराते हुए
शून्य को ताकते हुए
आँसुओं को स्थगित किये हुए

काश! उसे बोलना आता होता
और तुम्हें आता होता देखना, सुनना, छूना
तो तुम सुन पाते उसकी आवाज़,
देख पाते उसके आँसू,
छू पाते उसका हृदय

तो जान पाते
कि वह चुप नहीं था...
तुम ही घिरे रहे कुछ ग़लत और अनर्गल आवाजों से।

अजय 'दुर्जेय'

हवाओं को चीरते हुए भरी उड़ान, कांप गए दुश्मन!

- भारत के स्वदेशी ट्रेनर विमान ने कर दिया कमाल

पीले पंखों के शोर से गूंज रहा देश का आसमान!

नई दिल्ली (एजेंसी)। डिफेंस सेक्टर में भारत एक के बाद एक बड़ी कामयाबी हासिल कर रहा है। उसी क्रम में शुक्रवार को हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) ने बेंगलुरु में अपनी सुविधा से पहले हिंदुस्तान टर्बो ट्रेनर-40 (एचटीटी-40) सीरीज प्रोडक्शन विमान, टीएच 4001 की सफल उड़ान भरी। यह विमान अगली पीढ़ी के वायु सेना के योद्धाओं को प्रशिक्षित करने के लिए तैयार है। एचएएल ने एक्स पर यह जानकारी साझा करते हुए बताया कि एचटीटी-40 एक पूरी तरह से एरोबेटिक, टेंडम-सीट वाला टर्बोप्रॉप विमान है, जिसे बुनियादी उड़ान प्रशिक्षण, एरोबेटिक्स, इंस्ट्रूमेंट फ्लाइंग और रात्रि उड़ान सिखाने के लिए बनाया गया है।

यह विमान भारतीय सशस्त्र बलों के शुरुआती पायलटों के प्रशिक्षण की गुणवत्ता को बेहतर बनाएगा और आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को आगे बढ़ाएगा। एचटीटी-40 एक एब-इनिशियो ट्रेनर विमान है।

ओंकारेश्वर में 10किमी लंबा था जाम, घंटों फंसे रहे लोग

सोमनाथ से दर्शन करने आए युवा श्रद्धालु की हार्ट अटैक से मौत

खंडवा (नप्र)। ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने आ रहे श्रद्धालु जाम में फंस रहे हैं। टू-लेन सड़क का निर्माणाधीन होने और अन्य कोई वैकल्पिक रास्ता नहीं होने के कारण करीब 10 किलोमीटर लंबा जाम लगा रहा। इस बीच हजारों वाहन घंटों तक जाम में फंसे रहे हैं।इधर मंदिर में भी दर्शन के दौरान भीड़-भाड़ की स्थिति बनी रही। घबराहट के चलते एक युवा श्रद्धालु की मौत हो गई।

छुट्टी की वजह से भीड़ बढ़ी- छुट्टियों के चलते इन दिनों ओंकारेश्वर में बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंच रहे हैं। शनिवार को 10 हजार से ज्यादा निजी वाहनों से श्रद्धालु पहुंचे, लोगों की कुल तादाद एक लाख से अधिक रही हैं। प्रशासन की ओर से कोई ठोस कदम तक उठाए जा रहे हैं।

हालात ऐसे हैं कि, तीर्थनगरी में बड़े पार्किंग स्थल तक नहीं हैं। जबकि यहां आने वाले प्रत्येक वाहन से नाकाबंदी करके प्रवेश द्वार पर ही पार्किंग शुल्क वसूला जाता हैं। जिसका हर साल ठेका करोड़ों रुपए में जाता हैं। सिंहस्थ को

देखते हुए भी व्यवस्थाओं में सुधार नहीं दिख रहा हैं।

मंदिर में भीड़ देखकर शिखर दर्शन किए, फिर मौत

इधर, शनिवार को ही गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र के जूनागढ़ सोमनाथ से आए एक युवा श्रद्धालु की मौत हो गई। युवक केतन चौहान (35) की मौत की वजह हार्ट अटैक बताई है। दोपहर को वह ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग दर्शन कर ममलेश्वर दर्शन करने के लिए परिवार सहित पहुंचा था। जहां पर भीड़ देखकर उन्होंने शिखर दर्शन किए और अपने वाहन की ओर रवाना होने लगे। तभी घबराहट होने लगी, तब परिवार वाले ऑटो रिक्शा की मदद से युवक को सिविल हॉस्पिटल ओंकारेश्वर लेकर पहुंचे।

हाथ में पट्टी, पैर में प्लास्टर...

महिला क्रिकेटरों से 'गंदी हरकत' करने वाले अकील की अक्ल ठिकाने आ गई

भोपाल/इंदौर (नप्र)। आईसीसी विमेंस क्रिकेट वर्ल्ड कप इस समय भारत में आयोजित हो रहा है। सेमीफाइनल मैच खेलने के लिए ऑस्ट्रेलियन महिला टीम इंदौर पहुंची हुई है। इस दौरान महिला टीम से छेड़छाड़ करने का शर्मनाक मामला सामने आया है।

ऑस्ट्रेलियाई महिला क्रिकेट टीम की दो खिलाड़ियों के साथ एक बाइक सवार युवक ने पीछा किया और छेड़छाड़ की नीयत से टच किया। आरोपी पर छेड़छाड़ करने का मामला दर्ज हुआ है। एमआईजी पुलिस ने आरोपी अकील (निवासी खजराना) के खिलाफ धारा 74 व 78 के तहत एफआईआर दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर लिया। इसके बाद आरोपी के जो हाल हुआ वह चौंकाने वाला है। दरअसल, महिला क्रिकेटर से छेड़छाड़ की शिकायत मिलते ही पुलिस ने आरोपी की तलाश शुरू कर दी थी। उसको पकड़ने के लिए सीसीटीवी खंगाले गए। वहीं, छेड़छाड़ के दौरान वहां मौजूद एक राहगीर की सतर्कता से आरोपी की पहचान हुई। राहगीर ने संदिग्ध की बाइक का नंबर नोट कर लिया था। इसके आधार पर पुलिस ने आरोपी अकील खान को पकड़ लिया।

हाथ में पट्टी पैर में प्लास्टर के साथ आया नजर- बाइक में सवार होकर महिला क्रिकेटर से छेड़छाड़ कर फरार हुआ युवक चुस्त दुरुस्त नजर आ रहा था। हालांकि जब वह पुलिस कि गिरफ्त में आया तो उसकी चौंकाने वाली तस्वीर वायरल हुई। छेड़छाड़ करने वाला युवक एक हाथ में पट्टी में ढंका था और एक पैर में प्लास्टर चढ़ा था। सवाल उठता है कि छेड़छाड़ करने वाला युवक कुछ ही देर में ऐसे हाल में क्यों हो गए। पुलिस एडीसीपी राजेश दंडोतिया से मिली जानकारी के अनुसार पुलिस को देखकर आरोपी भागने लगा तो ऊंचाई गिरने के दौरान हाथ पांव में चोट आई है।

जीतू पटवारी ने कहा — मप्र की कानून-व्यवस्था हुई फेल

मध्य प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष श्री जीतू पटवारी ने इंदौर शहर में आईसीसी महिला क्रिकेट विश्व कप 2025 में भाग लेने आई दो ऑस्ट्रेलियाई महिला क्रिकेटरों के साथ हुई बेहद शर्मनाक घटना पर कड़ी निंदा की है। महिला क्रिकेटर के साथ छेड़छाड़ की कोशिश की, जो न केवल व्यक्तिगत अपमान है बल्कि पूरे राज्य की सुरक्षा व्यवस्था पर करारा प्रहार है। यह घटना अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मध्य प्रदेश और भारत की छवि को धूमिल करने वाली है, खासकर जब विश्व कप जैसे वैश्विक आयोजन के दौरान ऐसी लापरवाही हो रही हो।

खिलाड़ियों से की थी बदसलूकी

जानकारी के अनुसार, ऑस्ट्रेलियन महिला टीम की दो खिलाड़ी सुबह होटल रेडिसन ब्लू से कैफे की तरफ जा रही थी। इसी दौरान बाइक पर सवार युवक पीछा करने लगा। वह सफेद शर्ट और काली टोपी पहने था। बाइक सवार युवक महिला खिलाड़ियों के करीब पहुंचा और उनमें से एक को गलत तरीके से टच करते हुए फरार हो गया।

खिलाड़ियों की शिकायत पर एक्शन

युवक की गंदी हरकत से घबराई खिलाड़ियों ने तुरंत एसओएस नोटिफिकेशन भेजा। साथ ही सुरक्षा अधिकारी डैनी सिमंस से शिकायत की थी। वहीं, एसओएस नोटिफिकेशन मिलते ही सुरक्षाकर्मी मौके पर पहुंचे और उन्हें सुरक्षित होटल पहुंचाया।

मंडला में स्कूल यूनिफार्म में शराब खरीदती छात्राओं का वीडियो वायरल, दुकान पर कार्रवाई

मंडला (नप्र)। मध्य प्रदेश के मंडला जिले के नैनपुर में संचालित कंपोजिट शराब दुकान से स्कूली छात्राओं को शराब बेचने का मामला प्रकाश में आया। इस मामले का वीडियो वायरल हुआ तो प्रशासन हरकत में आया। शुक्रवार की शाम ही प्रशासन और आबकारी विभाग के अधिकारी संबंधित शराब दुकान में पहुंच गए थे और एक्शन लेने की कार्रवाई कर रहे थे।

उन्होंने जहां दुकान के दस्तावेजों और स्टाक की जांच की, वहीं आसपास के सीसीटीवी फुटेजों को भी खंगाला। सीसीटीवी फुटेज में अधिकारियों को साफ दिखाई दिया कि दुकान से स्कूली छात्राओं को शराब बेची गई। जबकि इस पर प्रतिबंध है। इस मामले में आबकारी एक्ट के तहत आपराधिक प्रकरण तैयार कर कलेक्टर की न्यायालय में प्रस्तुत किया जा रहा है।

ठेकेदार पर हो सकता है जुर्माना

नैनपुर की कंपोजिट शराब दुकान से स्कूली छात्रा को शराब बेचे जाने की पुष्टि हुई है। प्रकरण बनाकर कलेक्टर की न्यायालय में प्रस्तुत किया जा रहा है। ऐसे मामलों में ठेकेदार पर दो लाख रुपये तक के जुर्माने का प्रविधान है।

- रामजी लाल पांडे, जिला आबकारी अधिकारी-मंडला।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 35 °c
न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 26 अक्टूबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

वर्जिनिटी सर्टिफिकेट ही नहीं, की थी दो और डिमांड!

● सदमे में छात्रा का परिवार,मुरादाबाद के मदरसे का डर्टी सच

मुरादाबाद (एजेंसी)। मदरसा में 13 साल की छात्रा के दाखिले से पहले वर्जिनिटी सर्टिफिकेट मांगने के आरोप में पुलिस ने एडमीशन इंचार्ज को अरेस्ट कर लिया है। साथ ही प्राचार्य समेत कई कर्मचारियों के खिलाफ केस दर्ज कर जांच की जा रही है। लड़की के पिता ने अपनी शिकायत में मदरसा प्रबंधन पर एडमीशन के लिए 35 हजार रुपये और टीसी देने के लिए 500 रुपये लिए जाने का भी आरोप मढ़ा है। छात्रा के पिता पेश से टेलर हैं और चंडीगढ़ में रहते हैं। उन्होंने पाकबड़ा थाने में केस दर्ज कराया है। अपनी शिकायत में उन्होंने बताया कि वर्ष 2024 में बेटी का दाखिला मदरसा जामिया एहसान-उल-बनात में कक्षा सात में कराया था। इस साल उसका आठवीं में एडमीशन होना था। उनकी पत्नी बेटी को लेकर मदरसे पहुंची। दाखिला करने के लिए वे प्रधानाचार्य रहनुमा और एडमीशन सेल प्रभारी मो. शाहजहां से मिलीं। आरोप है कि दोनों ने पहले 35 हजार रुपये जमा करा लिए। इसके बाद वर्जिनिटी सर्टिफिकेट की मांग की गई। इसकी जानकारी मिलने पर पिता भी मदरसे पहुंच गए। आरोप है कि उनके साथ मदरसा स्टाफ ने

अभद्रता की और धक्के देकर तीनों को बाहर निकाल दिया। पिता का कहना है कि जब बेटी का मदरसे में दाखिला नहीं हुआ तो उन्होंने जमा की गई फीस वापस मांगी। इस पर फीस देने से इन्कार कर दिया गया। साथ ही टीसी (ट्रांसफर सर्टिफिकेट) देने के नाम पर 500 रुपये भी ले लिए गए। फिर भी मदरसा प्रबंधन ने टीसी नहीं दी। टीसी मांगने पर प्रधानाचार्य और एडमिशन सेल के प्रभारी ने धमकी दी कि अगर बार-बार यहां टीसी या फीस मांगने आए तो अंजाम बुरा होगा। उन्होंने कहा कि ऐसा चरित्र प्रमाण पत्र बनाया जाएगा कि कहीं दूसरी जगह पर भी छात्रा का एडमिशन नहीं हो पाएगा।

बिहार विस चुनाव में 'आसमान से जंग'

● प्रचार के लिए 15 हेलीकॉप्टर बुक, भर रहे चुनावी उड़ान

पटना (एजेंसी)। बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में राजनीतिक दलों ने प्रचार के लिए हवाई ताकत झोंक दी है। चुनाव प्रचार के लिए कुल 15 हेलीकॉप्टरों की बुकिंग की गई है, जिनमें से प्रतिदिन औसतन 12 से 13 हेलीकॉप्टर उड़ान भर रहे हैं। एक दिन हेलीकॉप्टर का किराया करीब 10 लाख है, ऐसे में एनडीए की ओर से हर दिन एक

करोड़ रुपए से अधिक खर्च किया जा रहा है। एनडीए के पास सबसे ज़्यादा 11 हेलीकॉप्टर हैं और वे सभी पूरी क्षमता से प्रचार में लगे हुए हैं। एनडीए की ओर से 11 में से 9 हेलीकॉप्टर भाजपा और 2 जदयू की ओर से बुक किए गए हैं। जदयू अपने दोनों हेलीकॉप्टरों का उपयोग लगभग प्रतिदिन कर रहा है। एक हेलीकॉप्टर का इस्तेमाल मुख्यमंत्री नीतिश कुमार स्वयं कर रहे हैं, जबकि दूसरे का उपयोग ललन सिंह कर रहे हैं।

सुपरकंप्यूटर की जगह एआई मॉडल से मानसून की ली डिटेल

● 30 दिन पहले ही सरकार ने किसानों को बारिश का अलर्ट भेजा, 38 लाख को फायदा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत सरकार ने इस साल पहली बार पारंपरिक सुपरकम्प्यूटर मॉडल की जगह आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस आधारित मौसम मॉडल का इस्तेमाल किया। इन मॉडल्स के जरिए 38 लाख किसानों को मानसून से जुड़ी जानकारी दी गई। एआई मॉडल्स ने न सिर्फ 30 दिन पहले मानसूनी बारिश के आगमन का सही समय बताया, बल्कि बीच में 20 दिन बारिश रुकने की चेतावनी भी दी, जो पारंपरिक मॉडल नहीं पकड़ सके। किसानों ने बताया कि इन पूर्वानुमानों के आधार पर उन्होंने बुवाई और फसल चयन के फैसले लिए। देश में मानसून केरल के रास्ते 2 जून को आता है, लेकिन इस बार 8 दिन पहले 24 मई को ही आ गया था। 11 अक्टूबर को मानसून की वापसी हुई। इस मानसूनी सीजन 937.2 मिमी बारिश दर्ज हुई।

अफगानिस्तान का पाकिस्तान को पानी देने से इनकार

● कुनार नदी पर डैम बनाने की तैयारी,भारत ने सिंधु जल संधि स्थगित की थी

काबुल (एजेंसी)। भारत के बाद अब अफगानिस्तान भी पाकिस्तान की ओर जाने वाले पानी को रोकने के लिए डैम बनाने की तैयारी कर रहा है। अफगान सूचना मंत्रालय ने गुरुवार को एक्स पर पोस्ट कर इसकी जानकारी दी। सूचना

मंत्रालय ने बताया कि तालिबान के सर्वोच्च नेता मावलवी हिबतुल्लाह अखुंदजादा ने कुनार नदी पर जल्द से जल्द बांध बनाने का आदेश दिया है। मंत्रालय के उपमंत्री मुहाजिर फराही ने गुरुवार को बताया कि पानी और ऊर्जा मंत्रालय को घरेलू कंपनियों को ठेका देकर बांध निर्माण शुरू करेंगे।

दिग्गी बोले,दवा कंपनियों से बीजेपी को 945 करोड़ चंदा मिला

इनमें 35 फर्मों की दवाएं अमानक थीं, कफ सिरप कांड में डिप्टी सीएम इस्तीफा दें

भोपाल (नप्र)। एमपी में जहरीले कोल्ड्रिफ कफ सिरप के कारण दो दर्जन बच्चों की मौतों के मामले में पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह ने डिप्टी सीएम राजेन्द्र शुक्ल का इस्तीफा मांगा है।

भोपाल में अपने आवास पर प्रेस कॉन्फ्रेंस कर कांग्रेस सांसद दिग्विजय सिंह ने कहा कि 2 सितंबर से अब तक परासिया में कोल्ड्रिफ कफ सिरप के कारण 26 बच्चों की मौतें हुई है। उन बच्चों को वह दवा दी गई, जिसमें डायथलीन ग्लायकॉल की मात्रा 48.6 प्रतिशत से ज्यादा थी, जबकि 0.01 प्रतिशत ज्यादा नहीं होना चाहिए।

कफ सिरप को क्लीन चिट देने वाले उप मुख्यमंत्री इस्तीफा दें

पूर्व सीएम ने कहा- 2 अक्टूबर को उप मुख्यमंत्री जो कि एमपी के स्वास्थ्य मंत्री भी हैं उन्होंने क्लीनचिट दी कि इसमें कोई गड़बड़ नहीं ऐसे व्यक्ति का क्या इस्तीफा नहीं होना चाहिए था? दिसंबर 2022 और 2023 में हिंदुस्तान में बनी डीईजी के कारण उज्बेकिस्तान में 18 बच्चे मारे थे। इसकी जानकारी देश के स्वास्थ्य मंत्रालय के पास थी, लेकिन स्वास्थ्य मंत्रालय ने इस पर रोक नहीं लगाई।

दवा कंपनियों से बीजेपी ने 945

करोड़ का चंदा लिया- पूर्व सीएम ने कहा- भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने दवा कंपनियों से इलेक्टोरल बॉन्ड डोनेशन के नाम पर 945 करोड़ रुपए का चंदा लिया। इन कंपनियों में 35 फर्म ऐसी थीं जिनकी दवाओं की गुणवत्ता निर्धारित मापदंडों पर खरी नहीं पाई गई। ऐसी कंपनियों ने चंदा दो, धंधा लो का क्रूर खेल खेला।

दवा में सीधा जहर मिलाया गया- दिग्विजय सिंह ने कहा- मध्यप्रदेश एवं देश में नकली दवाओं का कारोबार फल-फूल रहा है। जहरीली कफ सिरप कोल्ड्रिफ से हाल ही में मध्यप्रदेश में 26 मासूम बच्चों की मौत हुई है। यह एक निरंकुश भ्रष्टाचार और मानव जीवन के साथ खिलवाड़ का ज्वलंत उदाहरण है। कफ सिरप में डाय-एथिलीन ग्लाइकोल की स्वीकृत मात्रा 0.1 प्रतिशत है। उक्त कफ सिरप में यह मात्रा 48.6 प्रतिशत पाई गई जो सुरक्षित सीमा से 486 गुना ज्यादा थी। दवाई में सीधा-सीधा जहर मिलाया गया।

जिस समिति के सीएम अध्यक्ष उसने कोई ध्यान नहीं दिया

दिग्विजय ने कहा- इस सिरप को प्राइवेट डॉक्टरों द्वारा मरीजों के पर्चों पर लिखा गया और खुले बाजार में दवा की दुकानों से बेचा गया, लेकिन यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि राज्य स्वास्थ्य समिति जिसके अध्यक्ष स्वयं मुख्यमंत्री और सह-अध्यक्ष स्वयं स्वास्थ्य मंत्री हैं, किसी ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया।

सरकारी संस्थाओं ने सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों में गुणवत्ता नियंत्रण और निजी भागीदारी में सार्वजनिक-निजी साझेदारी के जरिए निगरानी रखने के दायित्व को पूरी तरह नजर अंदाज किया।

600 किमी का सफर कर सीएम भजनलाल से करेगा फरियाद

दिव्यांग पत्नी के लिए दिव्यांग पति की स्कूटी पर अनोखी यात्रा!

जैसलमेर (एजेंसी)। आपने पति-पत्नी के झगड़ों की खबरें तो खूब सुनी होंगी, लेकिन सरहदी जिले जैसलमेर में एक ऐसा दिव्यांग पति है जो अपनी दिव्यांग पत्नी के तबादले के लिए लगभग 600 किलोमीटर की यात्रा करके मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के दरवाजे पर गुहार लगाने वाला है। यह कहानी किसी पुराने धारावाहिक से कम नहीं है। जैसलमेर शहर के निवासी अनुरंगा, जो आरओ वॉटर का बिज़नेस करते हैं, की शादी साल 2014 में बीना से हुई थी।

पत्नी बीना भी दिव्यांग हैं, और उनकी एक 13 महीने की बच्ची ध्रुविका है। साल 2019 में पत्नी बीना का चयन थर्ड ग्रेड टीचर के रूप में हुआ। पिछले 4 साल से वह बांसवाड़ा जिले के सेमलिया स्थित उच्च प्राथमिक स्कूल में कार्यरत हैं, जो जैसलमेर से करीब 735 किलोमीटर दूर है। 13 महीने की छोटी बच्ची होने के कारण दोनों का एक-दूसरे से दूर रहना काफी परेशानी भरा है। अनुरंगा ने बताया कि एक साल पहले बच्ची का जन्म हुआ। अभी वो 13 महीने की है। घर पर बहुत समस्या है। इसलिए वह मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से अपनी पत्नी के जैसलमेर ट्रांसफर की गुहार लगाएंगे। उन्होंने ऐलान किया है कि जब तक उनकी पत्नी का तबादला जैसलमेर नहीं हो जाता, वह वापस जैसलमेर नहीं आएंगे और जयपुर में सीएम हाउस के बाहर ही फुटपाथ पर सोएंगे। पत्नी के जैसलमेर ट्रांसफर की मांग को लेकर अनुरंगा अपने एक मित्र के साथ स्कूटी से निकला।

इंजीनियर ने कार से 8 को रौंदा, 5 की मौत

डिलीवरी बॉय को टक्कर मारी, फिर भागने में 4 को और मार डाला

आगरा (एजेंसी)। आगरा में बेकाबू कार ने डिलीवरी बॉय समेत 8 लोगों को रौंद दिया। हादसे में 5 की मौत हो गई। 3 लोग घायल हैं, इनमें से 2 की हालत गंभीर है। घटना शुक्रवार रात की है। हादसे वाली जगह के नजदीक पुलिस चेकिंग कर रही थी। यह देखकर

कार चला रहा अंशुल घबरा गया। वहां से भागने के लिए उसने स्पीड बढ़ाकर 100 से ज्यादा कर ली। उसने पहले डिलीवरी बॉय को टक्कर मारी। उसकी मौके पर ही मौत हो गई। अंशुल फिर भी नहीं रुका। उसने 400 मीटर के दायरे में दो जगहों पर 7 और लोगों को रौंद दिया। इसमें 4 की जान चली गई। इसके बाद कार डिवाइडर से टकराकर पलट गई। हादसे के बाद लोगों ने कार चालक अंशुल को पकड़ लिया और पीट दिया। भीड़ ने हंगामा शुरू कर दिया। बवाल की सूचना पर कई थानों की फोर्स मौके पर पहुंची।

लालू और राबड़ी की सरकार आई तो जंगलराज भी आएगा

● खगड़िया में शाह बोले-छोटे मियां तो छोटे मियां बड़े मियां भी सुभानअल्लाह

मुंगेर (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को खगड़िया में एनडीए कैंडीडेट्स के समर्थन में सभा की। लोगों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, बिहार जंगलराज से मुक्त रहे, बहू-बेटियां सुरक्षित रहें। मैं छठ मइया से यही प्रार्थना करता हूं। मुझे लगा था कि छठ पर्व के बीच कौन आएगा, लेकिन पूरा पंडाल भर गया है। ये चुनाव किसी को विधायक और मुख्यमंत्री बनाने के लिए नहीं है। चुनाव फैसला करने वाला है कि फिर से जंगलराज लाना है या विकास चाहिए। लालू-राबड़ी की सरकार आई तो उसके साथ जंगलराज भी आएगा। एनडीए की सरकार आई तो

विकसित बिहार पूरे भारत में अपना डंका बजाएगा। शाह ने कहा कि लालू जी ने लैंड फॉर जॉब घोटाला किया। अलकतरा घोटाला किया। छोटे मियां तो छोटे मियां बड़े मिया भी सुभानअल्लाह।

तेजस्वी पर तंज-100 चूहे खाकर बिल्ली हज को चली

अमित शाह ने कहा कि, मैंने अभी लालू के छोटे बेटे तेजस्वी यादव के बयान सुने वो बिहार में हत्या, लूट, डकैती की बात कर रहा था। मैं कहता हूं 100 चूहे खाकर बिल्ली हज को चली। वो अपने पिता का राज देखें। क्या होता था। हमारे 20 साल के राज में बिहार में एक भी जघन्य नरसंहार नहीं हुआ। इनके शासन में हत्या, लूट, डकैती रोज की बात थी। इन लोगों ने राज्य को पिछड़ा बनाया। हमारी स्पष्ट नीति है- स्कूल-कॉलेज में पढ़ाई, टाइम पर दवाई, खेत में सिंचाई और हर घर में पानी की सप्लाई। ये चार सूत्रों पर हमारा बिहार अब आगे बढ़ने वाला है।

नक्सलवाद से मुक्त हुआ बिहार

नीतिश कुमार के नेतृत्व में एनडीए ने जंगलराज से मुक्ति दिलाई, परिवारवाद को समाप्त किया और सबसे बड़ी बात ये है कि हमने बिहार को नक्सलवाद से मुक्त करने का काम किया। बिहार में ये चुनावी लड़ाई किसी को विधायक, मंत्री और मुख्यमंत्री बनाने के लिए नहीं है, ये चुनाव निर्णय करने वाला है कि फिर से जंगलराज लाना है या विकास का राज लाना है। लालू-राबड़ी की सरकार में सिर्फ जंगलराज आएगा और एनडीए की सरकार में विकसित बिहार पूरे भारत में अपना डंका बजाएगा।

चार बार रेप, 21 बार शिकायत, 4 पन्ने का सुसाइड नोट

सतारा (एजेंसी)। महाराष्ट्र के सतारा जिले में एक 26 साल की महिला डॉक्टर की आत्महत्या ने खलबली मचा दी है। आत्महत्या करने से पहले डॉक्टर ने अपने हाथ की हथेली पर स्याही से लिखे नोट के अलावा चार पन्नों का डिटेल सुसाइड नोट भी छोड़ा है। इस नोट में उन्होंने आरोप लगाया है कि एक पुलिस अधिकारी ने उनका चार बार बलात्कार किया और उन्हें पुलिस मामलों में अभियुक्तों के लिए फर्जी फिटनेस प्रमाण पत्र जारी करने का दबाव डाला। अब यह भी सामने आया है कि उन पर न केवल पुलिस अधिकारियों बल्कि एक सांसद और उनके पीए यानी निजी सहायकों का भी दबाव था। यह महिला डॉक्टर सतारा जिले के फलटण उप-जिला अस्पताल में मेडिकल ऑफीसर के तौर पर काम करती थी। उन्होंने अपनी हथेली पर लिखे नोट में बताया कि सब-इंस्पेक्टर

सांसद की धमकी,सतारा डॉक्टर केस में खून खौला देने वाले खुलासे

गोपाल बदाने ने उनका चार बार बलात्कार किया और पांच महीने से अधिक समय तक उन्हें मानसिक और शारीरिक रूप से प्रताड़ित किया। डॉक्टर मूल रूप से बीड जिले की रहने वाली थीं और 23 महीने से अस्पताल में सेवा दे रही थीं। ग्रामीण क्षेत्र में सेवा की अपनी बॉन्ड अवधि पूरी करने में उन्हें सिर्फ एक महीना बाकी था, जब उन्होंने यह कदम उठाया। अपने चार पन्नों के सुसाइड नोट में उन्होंने लिखा कि पुलिस अधिकारी उन्हें अभियुक्तों के लिए फर्जी फिटनेस प्रमाण पत्र जारी करने के लिए दबाव डालते थे। कई बार तो अभियुक्तों को मेडिकल जांच के लिए लाया भी नहीं जाता था। जब उन्होंने मना किया तो सब-इंस्पेक्टर गोपाल बदाने और अन्य लोग उन्हें परेशान करते थे। उन्होंने नोट में कहा कि मेरी मौत का कारण सब-इंस्पेक्टर गोपाल बदाने है जिन्होंने मेरा बलात्कार किया और प्रशांत बानकर है जिन्होंने 4 महीने तक मुझे मानसिक और शारीरिक रूप से प्रताड़ित किया। गोपाल बदाने एक पुलिस अधिकारी हैं, जबकि प्रशांत बानकर उस मकान के मालिक का बेटा है जहां डॉक्टर रहती थीं। उन्होंने अलग-अलग अधिकारियों को 21 बार शिकायतें कीं, लेकिन उनके उत्पीड़कों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं हुई।

एसपी-डीएसपी से शिकायत अब तक नहीं हुई कार्रवाई

उनकी चचेरी बहन ने भी इसी तरह के आरोप लगाए कि डॉक्टर को मेडिकल प्रमाण पत्र झूठे बनाने के लिए मजबूर किया जा रहा था। उन्होंने मीडिया से कहा कि उन्होंने दो-तीन बार शिकायतें उठाई थीं। पुलिस अधीक्षक और उप-पुलिस अधीक्षक को पत्र लिखने के बावजूद कोई कार्रवाई नहीं हुई। उन्होंने आगे कहा कि पत्र में उन्होंने पूछा था कि अगर उनके साथ कुछ हुआ तो कौन जिम्मेदार होगा। उन्होंने अस्पताल परिसर में सुरक्षा की कमी को भी उजागर किया था, लेकिन कुछ नहीं हुआ। उन्होंने डीएसपी को भी फोन किया था, जिन्होंने कहा था कि वह उन्हें वापस फोन करेंगे, लेकिन किसी ने कोई कार्रवाई नहीं की। दोनों आरोपी बदने और बनकर के खिलाफ बलात्कार और आत्महत्या के लिए उकसाने के आरोप में मामला दर्ज किया गया है। पुलिस अधिकारी को निलंबित कर दिया गया है, खासकर जब सीएम ने मामले का संज्ञान लिया।

सूर्य उपासना का महापर्व छठ पूजा शुरू

भोपाल में उत्सव का माहौल, शहर के 52 घाट तैयार, लाखों श्रद्धालुओं होंगे शामिल

भोपाल (नप्र)। आस्था और सूर्य उपासना का चार दिवसीय महापर्व छठ पूजा शनिवार से शुरू हो गया है। राजधानी भोपाल में नगर निगम और प्रशासन ने घाटों पर तैयारियां पूरी कर ली हैं। श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए साफ-सफाई, रंग-रोगन, मरम्मत, विद्युत साज-सज्जा, चलित शौचालय, चेंजिंग रूम और पेयजल व्यवस्था दुरुस्त कर दी गई थी। शीतलदास की बगिया, कमला पार्क, वर्धमान पार्क (सनसेट पाइंट), खटलापुरा घाट, काली मंदिर घाट, प्रेमपुरा घाट, हथाईखेड़ा डैम, बरखेड़ा और घोड़ा पछाड़ डैम सहित कुल 52 स्थलों पर छठ पर्व का आयोजन होगा। निगम की टीमें शुक्रवार देर रात तक सफाई और सजावट में लगी रहीं। भोजपुरी एकता मंच के अध्यक्ष कुंवर प्रसाद ने बताया कि इस बार लाखों श्रद्धालु विभिन्न घाटों पर अर्घ्य देने पहुंचेंगे। उन्होंने कहा कि शहर के उत्तर भारतीय समुदाय में छठ को लेकर उत्साह चरम पर है। बाजारों में पूजा सामग्री, सूप-दउरा, ठेकुआ मोल्ड, फल और साज-सज्जा के सामान की बिक्री में तेजी आई है।

प्रशासनिक अमला भी तैयार

प्रशासन ने श्रद्धालुओं की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए पुलिस बल, गोताखोर टीम और मेडिकल सहायता केंद्र की व्यवस्था की है। ट्रैफिक पुलिस ने प्रमुख घाटों के आसपास पार्किंग और आवाजाही के लिए विशेष रूट प्लान तैयार किया है। घाटों पर प्रकाश व्यवस्था, बैरिकेडिंग और कंट्रोल रूम बनाए गए हैं।

- 25 अक्टूबर को नहाय-खाय
- 26 अक्टूबर को खरना
- 27 अक्टूबर को डाला छठ (सांझी अर्घ्य)
- 28 अक्टूबर को भोर अर्घ्य और पारण

विंध्य ने प्रदेश ही नहीं पूरे देश को गौरवान्वित किया है : श्री तोमर

भोपाल। विंध्य ने प्रदेश ही नहीं पूरे देश को गौरवान्वित किया है। श्री तोमर ने कहा दायित्व के कारण विंध्य से सम्पर्क लम्बे समय से बना है। इस तरह का पहला कार्यक्रम है जिसमे शामिल होने का अवसर मिला। राहुल भैया ने कहा और उनके आग्रह में ही इसमें शामिल हुआ। यह यादगार रहेगा। हम सब जानते है कि कोई व्यक्ति से शरीर मन बुद्धि और आत्मा से बना है। शरीर रूप में घर की जरूरत होती है। राजधानी बनने के बाद घर और बघेली बोलने और संस्कृति का आदान प्रदान की आवश्यकता को महसूस करते हुए इस बघेल खंड भवन की परिकल्पना की गई। विन्ध्य स्वतंत्र था और 1956 में विलीनीकरण के बाद मप्र में शामिल हुआ। इसकी छटा विभिन्न रूपों में प्रदेश को आलोकोलित करती रही है। यह पूरा क्षेत्र प्रकृति और विद्वता से भरपूर है। सुन्दरजा आम और सफेद शेर इसकी पहचान है। सफेद शेर रीवा में पहुंचे इसके लिए राजेन्द्र शुक्ल ने मदद मांगी और लोगो ने राजनीतिक दृष्टि से भी गांठने लगते है।

53 साल की उम्र में दौड़ेंगे एमपी के 'फ्लाइंग' अफसर

चेन्नई में होगी एशिया मास्टर्स चैम्पियनशिप,28 देश के एथलेटिक्स के साथ रेस लगाएंगे

भोपाल (नप्र)। चेन्नई में 5 से 9 नवंबर के बीच होने जा रही 23वीं एशिया मास्टर्स एथलेटिक्स चैंपियनशिप में एमपी के 'फ्लाइंग' अफसर विनोद सोनकिया भी दौड़ेंगे। 53 साल के सोनकिया भोपाल में एसडीएम है। वे चैम्पियनशिप में भारत की तरफ से 200 और 400 मीटर दौड़ लगाएंगे।

इस टूर्नामेंट में भारत सहित एशिया महाद्वीप के 28 देश के एथलेटिक्स हिस्सा लेंगे। इसके लिए डिप्टी कलेक्टर सोनकिया हर रोज 3 से 4 घंटे पसीना बहा रहे थे। इसी साल मार्च में उन्होंने ओपन स्टेट एथलेटिक्स चैम्पियनशिप की 200 मीटर रेस में गोल्ड मेडल जीतकर सबको चौका दिया था। उनकी रेस 10-20 नहीं, बल्कि करीब 200 एथलेटिक्स से थी। इनमें हर उम्र के एथलेक्टिस थे, लेकिन सोनकिया ने सबको मात देकर गोल्ड हासिल कर दिया।

इसके बाद नेशनल और इंटरनेशनल की तैयारी करने लगे। अभी वे टीटी नगर स्टेडियम में रोज सुबह 18 से 22 साल उम्र के एथलेक्टिस के साथ कर रहे हैं। कभी वे बचपन में अपने गांव के खेल मैदान में गड्ढों की वजह से रेस पूरी नहीं कर पाए थे, लेकिन जब दौड़े तो मेडल्स की झड़ी लगा दी।

इस बीच 17 साल का ब्रेक और फिर कमबैक की उनकी कहानी भी दिलचस्प है। उन्हें अब 'फ्लाइंग' अफसर के नाम से भी पहचाना जाने लगा है। सोनकिया टीटी नगर स्टेडियम में रोज सुबह 18 से 22 साल उम्र के एथलेक्टिस के साथ तैयारी कर रहे हैं।

नौवीं में जिद करके ट्रैक पर उतरे, पर रेस पूरी नहीं की

सोनकिया बताते हैं कि 1985 में नौवीं क्लास में था। तब 14 साल उम्र थी। तब स्कूल में संभाग स्तरीय प्रतियोगिता हुई। जिद में ट्रैक पर उतर गया, लेकिन बिना तैयारी के। 100 मीटर दौड़ में हिस्सा लिया, लेकिन गड्ढों की वजह से गिर गया। दूसरी ओर, आखिरी पाइंट पर पापा इंतजार कर रहे थे, पर मैं पहुंचा ही नहीं। ये बात चुभ गई और ठान लिया कि अब जमकर दौड़ूंगा।

पढ़ाई की वजह से दौड़ना बंद कर दिया

सोनकिया ने बताया, कॉलेज की पढ़ाई पूरी करने के बाद नौकरी की तलाश शुरू करने लगा। इस कारण वर्ष 1995 से दौड़ना बंद कर दिया। इसी दौरान 1 साल बड़ौदा डिवीजन में स्टेशन मास्टर और इसके बाद 11 महीने तक टीकमगढ़ में डिप्टी जेलर रहा। साल 1999 में नायब तहसीलदार बना। मैदानी नौकरी होने से दौड़ना ही भूल गया, जो लगातार 2012 तक रहा। 17 साल तक दौड़ से दूर रहा।

ब्लड प्रेशर बढ़ा मिला, इसलिए फिर से दौड़ना शुरू कर दिया- साल 2013 में सोनकिया की छतरपुर में बतौर तहसीलदार पद पर पोस्टिंग थी। इसी दौरान उन्होंने ट्रैक पर फिर कमबैक किया। इस बारे में सोनकिया बताते हैं कि मैं और मेरे चाचा एक शादी से लौट रहे थे। तभी रास्ते में उनकी तबीयत बिगड़ गई। तुरंत डॉक्टर के पास लेकर पहुंचा और कुछ जांचें करवाईं। तहसीलदार होने के नाते डॉक्टर ने मेरी भी ब्लड प्रेशर की जांच कर दी, जो बढ़ा हुआ निकला। सोनकिया बताते हैं कि ये जांच करवाने के बाद पूरी रात सो नहीं पाया। अगले दिन फिर से जांच करवाई तो कोलेस्ट्रॉल भी ज्यादा निकला। इसे कम करने के लिए योग और दौड़ना शुरू कर दिया। एक अफसर मित्र ने बताया कि सिविल सर्विसेस ऑल इंडिया होता है। फिर ठान लिया कि इसमें भाग लूंगा। इसी बीच भोपाल आ गया। टीटी नगर स्टेडियम में कोच एसके प्रसाद की गाइड में प्रैक्टिस शुरू की।

लगातार 3 साल सिल्वर जीते

वापस ट्रैक पर उतरने के बाद सोनकिया ने कई मेडल जीते। सिविल सर्विसेस में 3 सिल्वर मेडल जीत चुके हैं। वहीं, ओपन मास्टर में उनके पास 7 मेडल है। साल 2013 में वर्ल्ड मास्टर एथलेटिक्स ब्राजील में हुई थी। 2014 में एशियन चैम्पियनशिप जापान और 2016 में सिंगापुर में हुई एशियन चैम्पियनशिप में भी मेडल जीते।

अमिताभ बच्चन से मिले एमपी के दिव्यांग

इंदौर की गुरदीप की कहानी सुनकर भावुक हुए बिग बी, एक ने पैरों से बनाया पोट्रेट गिफ्ट किया

भोपाल/ इंदौर (नप्र)। इंदौर की गुरदीप वासु बोल, सुन और देख नहीं सकती। पांच साल से उसकी हसरत थी कि सदी के महानायक अमिताभ बच्चन से मिले। उन्हें देख नहीं सकती, इसके बावजूद उनके स्पर्श स्वरूप आशीर्वाद का इंतजार करती रही। गुरदीप का इंतजार दिवाली के पहले खत्म हो गया। मुंबई में उसकी मुलाकात बिग बी से हुई। उसे देखते ही बिग बी भावुक हो गए और अपने स्पर्श से उसकी हथेलियों पर आशीर्वाद महसूस कराया।

इंदौर से जुड़े दूसरे दिव्यांग (छत्तीसगढ़) मूक-बधिर हैं और जन्म से दोनों हाथ नहीं हैं। उन्होंने बिग बी से मिलने के लिए अपने पैरों से उनका पोर्ट्रेट बनाया। वे भी पांच साल से बिग बी से मिलने का प्रयास कर थे। दिवाली से पहले उनके लिए भी ये संयोग आया। उन्होंने बिग बी को उनके बर्थ डे के पूर्व पोर्ट्रेट गिफ्ट किया तो खुशी से महानायक की आंखें भर आईं। एक साथ दो बहुदिव्यांगों के जज्बे ने बिग बी को भाव विभोर कर दिया। उन्होंने दोनों को दिल से खूब दुआएं दीं। उनके शिक्षक, परिजन को भी काफी दाद दी। दिव्यांग का बनाया पोर्ट्रेट अब 'जलसा' गार्डन में सजेगा, जबकि ब्रेल लिपि में दी गई इंदौर की गुरदीप की शुभकामनाएं उनके जेहन में हैं।

महानायक के साथ 25 मिनट की मुलाकात

बिग बी से इन दोनों बहु-दिव्यांगों की मुलाकात मुंबई में 'कौन बनेगा करोड़पति के शो' के दौरान नहीं, बल्कि सेट से अलग से एक स्थान पर 9 अक्टूबर को कराई गई। अमिताभ बच्चन ने दोनों के परिजन और साइन लैंग्वेज टीचर ज्ञानेंद्र पुरोहित से इनकी बहुदिव्यांगता के बारे में जाना। अमिताभ को बताया गया कि दोनों की जिंदगी में जन्म से ही काफी चुनौतियां हैं। ये अन्य दिव्यांगों से अलग तीन तरह से दिव्यांग हैं। उन्हें पढ़ाने, परीक्षा दिलवाने के लिए किस तरह की मशक्कत हुई और सरकारी नौकरी के लिए कैसी-कैसी परेशानियां हैं। बिग बी का दोनों से करीब 25 मिनट का इंटरेक्शन रहा।

426 एसएलआर, एएसएलआर को कार्यपालिक मजिस्ट्रेट के पावर

तहसीलदार और नायब तहसीलदार के पदों में मर्ज किए जाने के बाद राजस्व विभाग का फैसला

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश सरकार ने राजस्व विभाग से जुड़े अधिकारियों को बड़ी प्रशासनिक शक्तियां सौंपते हुए अधीक्षक भू-अभिलेख (एसएलआर) और सहायक अधीक्षक भू-अभिलेख (एएसएलआर) को अब कार्यपालिक मजिस्ट्रेट के अधिकार दे दिए हैं। राजस्व विभाग ने इस संबंध में आदेश जारी कर सभी कलेक्टरों को निर्देशित किया है कि अब इन अधिकारियों से मजिस्ट्रियल कार्य भी कराए जा सकेंगे। इससे पहले सितंबर 2025 में राज्य शासन ने एक आदेश जारी कर एसएलआर और एएसएलआर के पदों को क्रमशः तहसीलदार और नायब तहसीलदार के पदनाम में मर्ज कर दिया था। अब उन्हें कार्यपालिक मजिस्ट्रेट के अधिकार दिए जाने से वे न्यायिक और प्रशासनिक दोनों कार्य कर सकेंगे।

रेवेन्यू कोर्ट में अब 2278 अधिकारी- राजस्व विभाग के मुताबिक, इस नए आदेश के बाद प्रदेश में रेवेन्यू कोर्ट और अन्य मजिस्ट्रियल कार्यों के लिए कुल 2278 अधिकारी उपलब्ध हो गए हैं। इससे राजस्व न्यायालयों में लंबित मामलों के निराकरण की गति तेज होगी और ग्रामीण एवं तहसील स्तर पर प्रशासनिक कार्यों में सुगमता आएगी। बता दें कि इस व्यवस्था को लागू करने का निर्णय 3 जून को पचमढ़ी में हुई कैबिनेट बैठक में लिया गया था।

ऐसा होगा तहसीलदारों का नया सेटअप- राजस्व विभाग ने कार्यपालिक मजिस्ट्रेट के पावर देने के आदेश 23 अक्टूबर को दिए हैं। इसके पहले विभाग ने कहा था कि प्रदेश में अधीक्षक भू-अभिलेख के 144 पद और तहसीलदार के 610 पद मंजूर हैं। दोनों पद कनिष्ठ प्रशासनिक सेवा के अंतर्गत समान वेतनमान वाले हैं। इन पदों का आपस में समायोजन होने के बाद अब तहसीलदार के 754 पद हो गए हैं। अधीक्षक भू-अभिलेख जिनका नया नाम तहसीलदार होगा, इस पद से डिप्टी कलेक्टर के पद पर पदोन्नति के लिए पूर्व में तय सीनियरिटी के आधार पर अपनाई गई प्रोसेस का पालन तब तक किया जाता रहेगा जब तक यह पूरा कैडर रिटायरमेंट या अन्य कारणों से पूरी तरह रिक्त नहीं हो जाता है। अधीक्षक भू-अभिलेख कैडर के पदों पर केवल नायब तहसीलदार के रूप में पदस्थ सहायक अधीक्षक भू-अभिलेख की ही पदोन्नति की जा सकेगी।

एएसएलआर और नायब तहसीलदार के लिए ऐसी होगी व्यवस्था

इसी तरह सहायक अधीक्षक भू-अभिलेख और नायब तहसीलदार कैडर को पदों के समायोजन को लेकर भी मंजूरी दी गई है। प्रदेश में सहायक अधीक्षक भू-अभिलेख के 282 और नायब तहसीलदार के 1242 पद स्वीकृत हैं। दोनों ही पद कनिष्ठ प्रशासनिक सेवा के अंतर्गत समान वेतनमान वाले पद हैं। इसलिए दोनों ही पदों को आपस में मर्ज कर दिया है। इसके बाद प्रदेश में नायब तहसीलदार कैडर के 1524 पद हो गए हैं।

अधीक्षक भू-अभिलेख (तहसीलदार) कैडर के पदों पर केवल नायब तहसीलदार के रूप में पदस्थ सहायक अधीक्षक भू-अभिलेख को ही पदोन्नति दी जाएगी। यह क्रम तब तक चलता रहेगा जब तक कि इस कैडर के सभी अधिकारी रिटायर नहीं हो जाते।

सहायक अधीक्षक भू-अभिलेख कैडर में सीधी भर्ती के स्वीकृत पदों पर अब कोई नई भर्ती नहीं की जाएगी। सीधी भर्ती के रिक्त पद जैसे जैसे खाली होते जाएंगे उन पदों को नायब तहसीलदार के स्वीकृत पदों के साथ जोड़कर नई भर्ती नायब तहसीलदार के रूप में की जाएगी।

सहायक अधीक्षक भू-अभिलेख के प्रमोशन के लिए मंजूर पदों पर राजस्व निरीक्षक के पद से प्रमोशन की कार्यवाही पहले की तरह नायब तहसीलदार और सहायक अधीक्षक भू-अभिलेख दोनों ही पदों पर पदोन्नति के लिए तय प्रतिशत के अनुसार की जाएगी। यह प्रक्रिया तब तक चलेगी जब तक वर्तमान में पदस्थ सभी राजस्व निरीक्षक की पदोन्नति नहीं हो जाती। नई भर्ती के अंतर्गत राजस्व निरीक्षकों के प्रमोशन की कार्यवाही नायब तहसीलदार भर्ती नियम 2011 के अनुसार की जाएगी।

डीआरएम त्यागी ने भोपाल स्टेशन का निरीक्षण किया

छठ पर्व पर यात्रियों की भीड़ को देखते हुए रेलवे ने बढ़ाई सतर्कता

भोपाल (नप्र)। छठ महापर्व पर बढ़ने वाली यात्रियों की भीड़ को ध्यान में रखते हुए भोपाल रेल मंडल ने तैयारियों को परखना शुरू कर दिया है। मंडल रेल प्रबंधक (डीआरएम) पंकज त्यागी ने शनिवार को भोपाल रेलवे स्टेशन, लिलेन लॉन्ड्री, आईओएच, कोचिंग डिपो और आईआरसीटीसी के बेस किचन का औचक निरीक्षण किया। उन्होंने प्लेटफॉर्म और स्टेशनों पर यात्री सुविधाओं, सुरक्षा व्यवस्था और टिकट चेकिंग की स्थिति का विस्तार से जायजा लिया।

डीआरएम त्यागी ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि भीड़भाड़ के दौरान यात्रियों को किसी भी तरह की असुविधा न हो। टिकट काउंटर, वेटिंग एरिया, शौचालय और पीने के पानी की सुविधाओं पर विशेष ध्यान देने को कहा गया। उन्होंने सुरक्षा एजेंसियों और स्टेशन स्टाफ से लगातार समन्वय बनाकर चलने के निर्देश दिए।

यात्रियों की हाइजीन और आराम रेलवे की प्राथमिकता

निरीक्षण के दौरान डीआरएम ने लिलेन लॉन्ड्री में बेडरोल की स्वच्छता और गुणवत्ता की जांच की। उन्होंने मशीनों से धुलाई, ड्राई और इस्त्री प्रक्रिया का निरीक्षण कर यह सुनिश्चित करने के निर्देश दिए कि यात्रियों को ट्रेनों में हमेशा साफ-सुथरे, उच्च गुणवत्ता वाले बेडरोल ही मिले।

उन्होंने कहा कि यात्रियों की हाइजीन और आराम रेलवे की प्राथमिकता है। इसके बाद डीआरएम त्यागी ने आईओएच डिपो में यात्री कोचों की ओवरहालिंग प्रक्रिया की समीक्षा की। उन्होंने वहां मौजूद इंजीनियरों से कहा कि कोचों की समयबद्ध मरम्मत और जांच से यात्रियों की यात्रा सुरक्षित बनती है, इसलिए गुणवत्ता में किसी भी स्तर पर समझौता न हो।

बाद में डीआरएम ने आईआरसीटीसी के बेस किचन का निरीक्षण किया। उन्होंने भोजन की गुणवत्ता और रसोई की स्वच्छता का परीक्षण किया, जिसे उन्होंने संतोषजनक पाया। उन्होंने निर्देश दिया कि यात्रियों को हमेशा ताजा, पौष्टिक और स्वच्छ भोजन उपलब्ध कराया जाए। इस निरीक्षण के दौरान वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक सौरभ कटारिया, वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर (कोचिंग) आर.पी. खरे सहित अन्य विभागीय अधिकारी भी मौजूद रहे।

उज्जैन, सागर-शाजापुर -इंदौर में बारिश, कई जिलों में बादल छाए

आज आंधी-बारिश का अलर्ट, भोपाल में भी कहीं-कहीं बूंदाबांदी हुई

भोपाल (नप्र)। पूर्व मध्य अरब सागर के ऊपर एक डिप्रेशन (अवदाब) एक्टिव है। जिसका असर आने वाले 4 दिन तक मध्यप्रदेश में देखने को मिलेगा। भोपाल में शनिवार सुबह से बादल छाए हुए थे। वहीं, धुंध का असर भी था। इस वजह से विजिबिलिटी कम हो गई है। कुछ इलाकों में बूंदाबांदी भी हुई है।

सागर -इंदौर में में तेज पानी गिरा। शाजापुर जिले के अकोदिया में गरज-चमक के साथ बारिश हुई। वहीं, पांढुर्णा में करीब एक घंटा पानी बरसा। बारिश होने के बाद मौसम में ठंडक घुल गई है। वहीं उज्जैन में दोपहर बाद तेज बारिश हुई।

इन जिलों में बदला रहेगा मौसम

मौसम विभाग ने भोपाल, इंदौर, झाबुआ, अलीराजपुर, धार, बड़वानी, खरगोन, शाजापुर, देवास, खंडवा, बुरहानपुर, सीहोर, हरदा, रायसेन, नर्मदापुरम, बैतूल, नरसिंहपुर, छिंदवाड़ा, पांढुर्णा, जबलपुर, सिवनी, अनूपपुर, डिंडौरी, मंडला और बालाघाट में बारिश का अलर्ट जारी किया है। बादल छाए रहने से दिन के तापमान में गिरावट रही।

कहानी

महेन्द्र तिवारी

सिसकियाँ

आज भी, जब तन्हाइयों में खो जाती हूँ तो लगता है मानो मैं किसी पुरानी बस की खिड़की से बाहर झाँक रही हूँ - पीछे छूटते धूल उड़ाती पगडंडियाँ, किनारे पर खड़े जामुन के पेड़ों की कतारें, और कस्बे के उस छोटे से स्कूल की ठंडी दीवारें। मेरा संसार वहीं सिमटा हुआ था। मेरी दुनिया में एक खलिश थी - मैं साँवली थी, पर मेरे नयन-नक्श कुछ ऐसे ईश्वरीय देन थे कि लोग मुझे सहज ही स्नेह दिया करते थे।

पिता नौकरी के सिलसिले में अक्सर बाहर रहते थे। माँ के साथ हम बच्चे गाँव में ही रहते थे। पाँच भाई-बहनों में मैं सबसे बड़ी थी। इस नाते मुझे घर में एक अलग स्थान मिला था, ज़िम्मेदारी और थोड़ी इज़्ज़त दोनों। लेकिन माँ का स्वभाव बहुत सख़्त था। वो हर छोटी-बड़ी बात पर पैनी नज़र रखतीं और किसी पर जल्दी विश्वास नहीं करतीं। मुझे पढ़ने-लिखने की पूरी छूट उन्होंने दी थी, लेकिन उस स्वतंत्रता पर एक अदृश्य जंजीर भी कस दी थी- जरा संभल कर रहना, लड़की को फिसलते देर नहीं लगती।

उस वक़्त हमारी उम्र वही थी जब सपने आकार लेते हैं, मन हर ओर भटकता है और दिल को शब्दों से ज़्यादा एहसास समझ में आने लगते हैं। कहते हैं लड़कियाँ जल्द ही जवान हो जाती हैं। लेकिन गांव में काफी संभलकर रहना पड़ता है। वैसे मेरी कई दोस्त काफी चालू थीं, उन्होंने वह सब अनुभव कर लिया था जो शादी के बाद ही नसीब होता है।

मैं तब हाई स्कूल में थी। इसी दौरान हमारे स्कूल में एक नए अध्यापक आए-नीरज सर। वो गणित और विज्ञान पढ़ाते थे। उनकी शख़्सियत में कुछ ऐसा था कि हर किसी की नज़र उन पर टिक जाती। संयमित, पढ़े-लिखे और सादगी से भरे इंसान। हम लड़कियों के बीच उनका अपना एक अलग ही क्रेज़ था। कई सहेलियाँ उन्हें मज़ाक में 'जीजाजी' कहतीं क्योंकि उनके किसी मित्र की साली भी हमारे ही क्लास में थी। पर मैंने उन्हें हमेशा 'भैया' ही कहा।

शायद इसलिए कि मेरे जीवन में कोई ऐसा दोस्त नहीं था जिससे मैं दिल की बात कह सकूँ। भैया कह देने से एक सुरक्षा-सा घेरा बन जाता था, एक मर्यादा कायम रहती थी।

हम अक्सर बस में स्कूल से घर लौटते वक़्त मिलते। उनके हाथ में हमेशा कुछ किताबें होतीं थीं। एक दिन हिम्मत कर मैंने उनसे एक किताब माँग ली। बिना कोई सवाल पूछे उन्होंने किताब थमा दी। फिर धीरे-धीरे ये सिलसिला बढ़ा। और एक दिन हिम्मत करके मैंने किताब में एक चिठ्ठी डाल दी।

भैया जी,

सदर प्रणाम।

मुझे नहीं पता क्यों, पर आपमें मुझे अपने बड़े भाई का अक्स दिखाई देता है। मेरा एक छोटा भाई है, पर बड़ा भाई जैसा साया आपसे मिलने पर ही महसूस होता है। आपसे मिलकर वह खालीपन कुछ हद तक भर जाता है।

आपकी बहन,

सुमन।

उस दिन उन्होंने जो किताब लौटाई, उसमें कोई जवाब नहीं था। बस एक छोटी सी मुस्कान थी और उस मुस्कान में एक मौन स्वीकार। फिर अगली किताब में उनका जवाब आया। और यूँ किताबों के साथ चिठ्ठियों का सिलसिला चल निकला।

हमने कभी कोई सीमा नहीं लांघी। हमारे शब्दों का रिश्ता सीमाओं के भीतर था, पर उन सीमाओं के भीतर भी एक गहरी नदी बहती थी। जब कभी किताबें लेते-देते हमारी उंगलियां छू जातीं, एक हल्की सी सुरसुरी दौड़ जाती शरीर में। किशोर उम्र काफी नाजुक होता है। अगर समाज का बंधन और अंकुश ना हो तो पता नहीं क्या बवंडर हो जाये। लेकिन हमारे रिश्ते का स्वरूप भाई-बहन का ही था। यही मर्यादा हमें भटकने से रोकती।

उस दौर में न मोबाइल था, न खुला माहौल।

लड़का-लड़की की दोस्ती समाज के लिए शंका का विषय थी। इसलिए चिठ्ठियाँ ही हमारी दुनिया थीं और डर हमारा पहरेदार। डर कि कहीं माँ को भनक न लग जाए, कहीं समाज इसे गलत अर्थों में न ले ले।

फिर मेरी दसवीं बोर्ड के इम्तिहान सर पर आ गए। पढ़ाई में मन लगाना कठिन था, पर ज़रूरी भी था। उन दिनों उन्होंने मेरा हौसला बहुत बढ़ाया। उनकी चिठ्ठियाँ मेरे लिए सहारा बनीं। हर पत्र में कोई प्रेरणादायक उद्धरण-कभी तुलसीदास, कभी प्रेमचंद, कभी विवेकानंद। उन शब्दों में मुझे मार्गदर्शन, दोस्ती और अपनापन सब कुछ मिलता।

और अब हम अंतर्देशीय से पत्र व्यवहार करने लगे थे। मैंने एक सुझाव दिया-

भैया, आप चिठ्ठी ऐसे लिखिए जैसे कोई लड़की अपनी सहेली को लिख रही हो। अंत में मेरी सहेली का नाम डाल दीजिए और भेजने वाले के पते में भी उसी का नाम लिख दीजिए। माँ बहुत शक्की हैं, कहीं उन्हें पता न चल जाए।

वो मान गए। और हमारी दुनिया और भी छुपकर चलने लगी। यह इसलिए भी जरूरी था क्योंकि मेरी माँ बहुत शक्की किस्म की औरत थी और उन्हें हर बात की भनक लग जाती थी।

परीक्षा के दिनों में मैंने उन्हें सेंटर पर बुलाया। वो आए भी। माँ से मिलवाते समय मैंने कहा, ÷ये मेरे एक दोस्त के भाई हैं, पढ़ाई में मदद करते हैं।

माँ ने संदेह से पूछा-÷आप मेरी बेटी को कैसे जानते हैं?

उन्होंने शांत भाव से उत्तर दिया-मैं इसे अपनी बहन मानता हूँ। पढ़ाई में मदद करता हूँ।

माँ का चेहरा कठोर हो गया। उनकी आँखों में शंका के बादल घिरने लगे। उस रात माँ ने मुझे चेतावनी दी-

ऐसे रिश्ते समाज में इज़्ज़त नहीं पाते। मुंहबोले भाई का कोई मतलब नहीं होता। जब तेरे बाबा को पता चलेगा तो तू जानती है क्या होगा। अब से उससे मिलना बंद कर दे।

मैं निःशब्द थी। भीतर जैसे कोई दीवार ढह रही थी। अगले दिन उनकी लौटाई किताब में कोई चिठ्ठी नहीं थी-बस एक पंक्ति लिखी थी- ÷रिश्तों का अंत अगर इज़्ज़त बचा ले, तो उसे त्याग कहा जाता है, हार नहीं।

इसके बाद सब बदल गया। जल्दी ही मेरी शादी तय कर दी गई। एक अच्छे घर में, एक अच्छे आदमी के साथ। ज़िंदगी में सब कुछ था - इज्ज़त, सुविधा, बच्चों की किलकारी। मैंने एक आदर्श पत्नी और माँ का जीवन जिया। समाज की नज़रों में, मेरी कहानी सफल थी।

लेकिन उन किताबों में दबी चिठ्ठियों की खुशबू अब भी मेरे जीवन की किसी अलमारी में छुपी थी। शायद वो प्यार नहीं था। शायद मोह भी नहीं। वो एक अद्भुत भ्रम था, जो किशोर मन की नमी में उग आया था। लेकिन भ्रम भी अगर इतना सच्चा हो, तो जीवनभर की अविस्मरणीय स्मृति बन जाता है।

कुछ रिश्ते ऐसे होते हैं जिन्हें हम खुले में जी नहीं पाते क्योंकि सच्चे रिश्ते भी समाज की निगाहों में झूठे बन जाते हैं, सिर्फ इसलिए क्योंकि उन रिश्तों को इजाजत नहीं मिल पाती।

अब जब भी मैं कभी अपनी आलमारी सहेजती हूँ, तो अनायास हमारी चिठ्ठियाँ मिल जाती हैं। मैं मुस्कुरा देती हूँ क्योंकि कुछ रिश्ते भले ही समय की रेत में दब जाएं, लेकिन उनकी छाप दिल की किताबों में हमेशा के लिए दफ़न होकर भी सिसकियाँ जीवित रह जातीं हैं।

लघुकथा

मेहमान आ रहे हैं

रामेश्वरम तिवारी

आजकल देश के ज़्यादातर शहरों में जगह-जगह आसमान छूते हुए फ़्लैट, छोटी-बड़ी सिंगल, डबल, ट्रिपल माले की कॉलोनियाँ बन गई हैं। जिनमें ज़्यादातर सेवानिवृत लोग रहते हैं। चूँकि उनके बेटे-बेटियों की शादियाँ हो चुकी हैं और वे अपनी नौकरी की वजह से अपने परिवार के साथ या तो विदेश में या फिर देश के किसी मेट्रो शहर में जा बसे हैं।

वैसे, तो सनातनियों के अनेक त्योहार हैं, पर उनमें दीपावली सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। जिसमें हरेक माँ-बाप की दिली इच्छा होती है कि उनके बेटे-बहू, पोते-पोतियों के साथ साल में कम से कम एक बार सब मिलकर दीपोत्सव मनाएँ। इसलिए बूढ़े माँ-बाप असहाय होने के बावजूद घर की रंगाई-पुताई, साफ़-सफ़ाई से लेकर दीपावली के दो दिन पहले से बूढ़ी माँ गुजिया, मिठाई और नमकीन बनाने और बूढ़े बाप चार दिन पहले से घर को दुल्हन की तरह रौशनी से सजाने में लग जाते हैं।

बेटे-बहू के आगमन की ख़ुशी में कुछ दिनों के लिए बेचारे बावले-से हो जाते हैं। कॉलोनी के किसी रहवासी ने अपने पड़ोसी अधिकारी की चार दिनों की इस खुशी में सेंध मारते हुए यूँ ही मज़ाक़ में पूछ लिया- 'सर जी! आप किसका रास्ता देख रहे हैं। क्या कोई मेहमान आने वाले हैं? जिनके इंतज़ार में रास्ते पर सुबह से नज़र गड़ाए हुए हैं।'

सर जी ने उत्साहित होते हुए कहा- 'हाँ! कुछ ऐसा ही समझ लीजिए। बेटा-बहू चार दिन के लिए मेहमान की तरह आ रहे हैं। किंतु पड़ोसी के शब्द सर जी के मन में शूल की तरह चुभ गए। पल भर के लिए उनकी ख़ुशी काफूर हो गई और उनका दीप्त चेहरा एकदम से सफ़ेद पड़ गया।

पाँच करोड़ की कारों में सवार रोकेंगे भ्रष्टाचार

व्यंग्य

मोहन वर्मा

लेखक पत्रकार हैं।

समाचारों की सुर्खियों के अनुसार दिल्ली स्थित लोकपाल जिसके पास भ्रष्टाचार रोकने की जिम्मेदारी है,ने सात लक्जरी बीएमडब्ल्यू कार खरीदने के लिये टेंडर निकाला है । ये सात कारें जिनकी कीमत तकरीबन पाँच करोड़ रुपये हैं,लोकपाल के अध्यक्ष और बाकी छह सदस्यों के उपयोग में आएगी जब वे भ्रष्टाचार रोकने की मुहिम पर निकलेंगे ।

भ्रष्टाचार जहां शिष्टाचार बन चुका हो,हम भी खाएँ तुम भी खाओ, जन जन की अन्तरात्मा में ये रच बस चुका है कि बगैर लिये दिये कहीँ कुछ नहीँ हो सकता,वहाँ शीर्ष स्तर के भ्रष्टाचार रोकने की मुहिम जैसे बड़े काम करने निकलने वाले बड़े अफसरों को बड़ी गाड़ी होना वाज़िब ही है। अब ये कोई दस बीस हजार या दो चार लाख की रिश्वत के लेन देन को पकड़ने वाले कर्मचारियों या अफसरों की टीम तो है नहीँ कि छोटी मोटी गाडी या जीप या दोपहिया से जा धमके और पकड़ लिया रंगे हाथ और हो गया काम ।

ये शायद वही लोकपाल है जिसके लिये अन्ना बापू ने देशभर में आन्दोलन किया था । छोटे मोटे कस्बों से लेकर बड़े शहरों तक हुए जन आंदोलन में लोगों ने सफेद टोपी लगाकर 'मैं भी अन्ना' और 'रिश्वत न लूँगा न दूंगा' के जोरदार नारे लगाकर जुलूस

निकाले थे । ये बात दीगर है कि इसी आंदोलन की उपज से बड़े नेता बने कुछ लोग कथित रिश्वतखोरी के इल्ज़ाम में लोगों को टोपी पहनाकर जैल की हवा खा कर इन दिनों पता नहीँ कहाँ की हवा खा रहे है ।

भ्रष्टाचार करने वाला या रिश्वत लेने वाला रिश्वत देकर छूट जाता है। बड़े बड़े घोटालेबाज कानून के शिकंजे में लोगों का इस तरह अभिवादन करते है जैसे कह रहे हो 'अभी गया अभी आया' और वाकई वे कानून को अंगूठा बताकर जिस अंदाज में आते है वह दूसरों को भी संदेश देता है कि - राह कोई बहुत मुश्किल नहीँ है..हिम्मते मर्दा तो मददे खुदा। रिश्वत लेने वाले लेने और बचने के सारे रास्ते जानते है।

हमारे शीर्ष नेता चाहे किसी भी मंच से हुंकार भर कर कहें- 'न खाऊँगा न खाने दूँगा' मगर दुनिया जानती है उनके ही सिपहसालार अपने अपने सूबों में क्या गुल खिला रहे है । और आलाकमान से ये सच छुपा हो ऐसा भी नहीँ है। ये पार्टी हो या वो काजल की कोठरी में कोई बेदाग नहीँ है। राजनीति में हो या मलाईदार प्रशासनिक पद पर, नीचे से ऊपर तक जब लाखों रुपये ले दे कर कोई व्यक्ति कुर्सी हथियाता है तो कोई हरि भजन करने को थोड़े ही बल्कि समय रहते जो भी जितना बटोर सकें बटोर लें।

उम्र के इतने सालों में जो भी देखा सुना पढ़ा उससे यही निष्कर्ष निकला है भ्रष्टाचार लेनदेन हम सबकी रग रग में समा चुका है । अपना काम बिना कुछ लिये दिये हो जाएगा ये कल्पना करना मूर्खता है बड़े बड़े घोटालेबाजों को बाइज्जत बरी होते देखा । राजनीति में छुटभैये नेताओं को देखते देखतेलक्ष्मीपुत्र

होते देखा और कैसे सूटकेस की राजनीति से लोगों के दागदार चेहरे साफ़ सुथरे हो जाते है वो सब देखते देखते उम्र हो गई । बहरहाल पाँच करोड़ की गाडियों से निकलें या हाथी-घोड़े या रथ पर सवार होकर निकलें भ्रष्टाचार और भ्रष्टाचारियों पर नकेल मुश्किल ही नहीँ नामुमकिन है,हाँ व्यंग्य का विषय जरूर है ।

आदमी हूं, आदमी से प्यार करता हूं

हास्य-व्यंग्य

सुरेश सौरभ

लेखक व्यंग्यकार हैं।

प्यार पर कोई टैक्स नहीं, कोई जीएसटी नहीं, इसलिए मैं आदमी हूं, आदमी से प्यार करने की कुदरती कवायद में लगा हूं।अगर मैंने ऐसा किया है तो इसमें सबको मेरा सपोर्ट करना चाहिए,पर कुछ नामुराद मेरे प्यार को वायरल करने पर आमादा है। इन्हें मेरे समलिंगी प्रेम पर चिंतन मनन करना चाहिए। मेरे प्रेम को बौद्धिक वर्ग अगर अपना पूरा समर्थन प्रदान कर दे,तो भारत में विकराल रूप से बढ़ रही जनसंख्या वृद्धि पर खासा नियंत्रण लगाया जा सकता है, लेकिन मुझ जैसे अमन-प्रेम पसंद, लाल लंगोटे और नेकर वाले नेता पर जाने क्यों लोग कीचड़ उलीचे जा रहे है, तेली का तेल जले और मशालची का गुर्दा फेफड़ा बस। अगर मैं किसी संगठन का प्रमुख पदाधिकारी रहते हुए,आदमी रहते हुए किसी आदमी से जी भर कर प्यार कर लिया,चुम्मा-चाटी कर लिया तो इसके कोई न कोई राष्ट्रवाद के ठोस कारण जरूर रहे होंगे ,उन कारणों को पहले लोग जाने फिर मेरी इज्जत का रुहआफ्जा बनाएं।

कायदे से तो मेरे हौसले और दिलेरी से लोगों को प्रेरणा लेनी चाहिए। मुझसे प्रेरित होकर तमाम कुंवारे लाभान्वित होंगे और शादी ब्याह की चौरासी कोसीय परिक्रमा से निजात पा सकेंगे। हजारों लाखों रपैया बचा सकेंगे, पर कुछ विपक्ष के चिरकुट लोगों को मेरी यश कीर्ति से बहुत जलन-कुढ़न हो रही है, इसलिए मेरे निश्छल प्रेम की अभिव्यक्ति पर उंगलियां उठा कर, अपनी घिनौनी अयोग्यता का प्रदर्शन कर रहे हैं। ऐसे अयोग्य व्यक्तियों की टीका टिप्पणियों से मैं कतई डरने वाला नहीं हूं। जिसको जो बन पड़े वो करें ,पर मेरे प्रेमाचार को अभी तक न कोई रोक पाया है, और न कोई आगे रोक

पायेगा ,इसके लिए चाहे जितनीं भी देशी विदेशी शक्तियां सक्रिय हो जाएं, पर मेरा कुछ बिगाड़ न पायेंगी,जो लोग मुझे बदनाम करने की कोशिश कर रहे हैं उन्हें मेरे सच्चे प्रेम के आगे एक न एक दिन नतमस्तक होना ही पड़ेगा। मैं सोशल मीडिया से, कतई नहीं डरने वाला, जो लोग मेरे फोटू सोशल मीडिया पर डाल-डाल कर मुझे परेशान कर रहे हैं, वह इस बात को बहुत अच्छी तरह से अपने भेजे में डाल लें कि घोड़े की पिछाड़ी से नेता की अगाड़ी हमेशा बचना चाहिए।अन्यथा ऐसी दुलत्ती मारुंगा कि आगे पीछे की सारी नस्ले मेरा भजन करेंगी।

नेता बनने की कला

मुंशीराम को अपनी भाषण कला से लोगों के दिलों में स्थान बनाने का अब भी भरोसा था ।सो उसने नेता गिरी में रोजगार तलाशने की संभावना का पता लगाया।एक दिन वह शहर के मुख्य बाजार से गुजर रहा था ।वहां दुकानदारों को नगर परिषद द्वारा पुलिस की सहायता से अतिक्रमण हटाकर उन्हें चेतावनी दी जा रही थी।कई दुकान वालों के सड़क पर फैले पसरे सामानों के को जब्त भी किया जा रहा था।अफरा तफरी मची हुई थी ।ऐसे में उसने वह अनुकूल परिस्थिति समझ विरोध जताने वालों के बीच में खड़ा हो गया और दुकानदारों के पक्ष में भाषण देने लगा।ऐसे ही वह जब तब जनहित के कई मुद्दों पर विभिन्न स्थानों पर बोलने लगा ।उसके भाषण की लच्छेदार बातों से और कुछ हो ना हो पर उसकी नेता के रूप में पहचान बन गई ।

कटाक्ष

दिनेश विजयवर्गीय

लेखक साहित्यकार हैं।

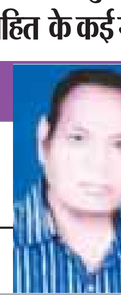

एम ए पास तीस साल के मुंशीराम ने नौकरी पाने के लिए पिछले पांच वर्ष से कई प्रतियोगी परीक्षाएं दी, पर सफलता कहीं नहीं मिली ।अंत में उसने यह सोच लिया कि हर युवा को नौकरी प्राप्ति की प्रक्रिया में सफलता मिलना संभव नहीं है। इसलिए वह निराश न होकर कुछ नया सोचने लगा।वैसे उसमें एक गुण था स्पीच देने का। जब वह कॉलेज में पढ़ता था तो अपनी भाषण कला से लोगों को मोहित कर देता था। जैसे उसके कंठ में सरस्वती का वास हो ।अपनी इसी अभिव्यक्ति की कला से वह एक दिन कॉलेज की छात्र यूनियन का अध्यक्ष बन गया । स्टूडेंट की समस्या को उसे टेकल करना आगया ।वह विश्वास देकर आई बला को टालने की कला भी उसमें आगई।

मुंशीराम को अपनी भाषण कला से लोगों के दिलों में स्थान बनाने का अब भी भरोसा था । सो उसने नेता गिरी में रोजगार तलाशने की संभावना का पता लगाया। एक दिन वह शहर के मुख्य बाजार से गुजर रहा था ।वहां दुकानदारों को नगर परिषद द्वारा पुलिस की सहायता से अतिक्रमण हटाकर उन्हें चेतावनी दी जा रही थी। कई दुकान वालों के सड़क पर फैले पसरे सामानों के को जब्त भी किया जा रहा था। अफरा तफरी मची हुई थी । ऐसे में उसने वह अनुकूल परिस्थिति समझ विरोध जताने वालों के बीच में खड़ा हो गया और दुकानदारों के पक्ष में भाषण देने लगा। ऐसे ही वह जब तब जनहित के कई मुद्दों पर विभिन्न स्थानों पर बोलने लगा । उसके भाषण की लच्छेदार बातों से और कुछ हो ना हो पर उसकी नेता के रूप में पहचान बन गई ।

वह जब नगर परिषद के चुनाव नजदीक आए तो उसने अपने बने जन आधार पर चिंतन किया और वह निर्दलीय खड़ा होने का मन बनाने लगा। अभी मुंशीराम अपने जन समर्थन की टोह ले ही रहा था कि उसके पास एक प्रमुख पार्टी के दो बड़े नेता आये और उससे अपनी पार्टी में लेकर चुनाव लड़ने का प्रस्ताव रखा है । इतना ही नहीं उसकी वोट कमाओ क्षमता की संभावनाओं को देख पार्टी जीतने पर सभापति बनाने का भी भरोसा जताया । मुंशीराम ने आगा पीछा सोच अपनी स्वीकृति दे दी।

चुनाव में हर गली मोहल्ले में वह पार्टी उम्मीदवारों के पक्ष में वोट देने के लिए भाषण देता। लोगों से वह कहता कि उनकी पार्टी जीती तो शहर का कायाकल्प कर देगा । यहां की प्राकृतिक व ऐतिहासिक पर्यटन क्षमता से पर्यटन नगरी बना देगा ।मुंशीराम की किस्मत गेंद की डप्पे मार रही थी। चुनाव में उसकी पार्टी जीतने के बाद वह पार्टी और पार्टी के लोगों का हीरो बन , नगर परिषद का सभापति बन गया ।

वह जनता का आभार जता व धन्यवाद देने के लिए बाजारों में गया । सभी ने उसे माला पहना मिठाई खिला स्वागत किया । अब लोगों को उससे बड़ी आशा थी।

मुंशीराम जानता था कि अभी की गई मेहनत व ईमानदारी और शहर को नयापन देने की बात उसके विधायक बनने की राह प्रशस्त करेगी।

पार्टी की मीटिंग में बड़े नेता भी उसके सामने छोटे लगने लगते ।उसने मीटिंग में शहर विकास की योजना रखी और उसे पूरा करने के लिए संसाधन जुटाने की योजना बताई ।

मुंशीराम ने बाजारों का दौरा कर लोगों को समझाया कि यह शहर तुम्हारा हमारा सबका है। अगर यह साफ सुथरा और अतिक्रमण रहित रहेगा तो शहर की अपनी अच्छी पहचान बनेगी। उसका कहना लोगों को रास आया। उसने शहर में दो नए बाजार विकसित करने की योजना बनाई ,जिससे बढ़ती जनसंख्या को सुविधा मिले और बाजारों की भीड़ भाड़ से मुक्ति मिले। ट्रैफिक व्यवस्था में सुधार हो । इसे उसने अपने कार्यों की प्राथमिकता में लिया। पार्टी को भी यह अपने और शहर वासियों के लिए सुंदर भविष्य की छवि दिखाई दी।

एक पुराने नेता ने तो मुंशीराम को विधायक और मंत्री बनने का आशीर्वाद तक दे दिया ।पार्टी लोगों ने तालियां बजाकर उसके सुखद भविष्य के लिए जय जयकार की। अब तो जहां भी कोई समारोह हो चाहे वह सरकारी हो या निजी, मुंशीराम ही मुख्य अतिथि ? बनने के लिए पहली प्राथमिकता रहते। अब तो वह अपने कॉलेज का भी मुख्य अतिथि बना । अब मान सम्मान के साथ अर्थ प्राप्ति भी होने लगी ।उसने कभी न सोचा था कि उसकी अभिव्यक्ति कला उसे यह गौरवशाली दिवस दिखा देगी । वह अब अपने सुखद भविष्य के लिए सुंदर सपने देखने लगा और मन ही मन बुदबुदाया, वाह मुंशी !तेने तो कमाल कर दिया।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

ऋग्वेद में शिल्प, कला और कलाकार

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

जीवन अनमोल है, जीवन की हर एक घटनाएं महत्वपूर्ण हैं। जीवन में अपने-अपने कृत्यों में लीन हर एक प्राणी महत्वपूर्ण है। जो जिस हेतु इस जगत में आया हुआ है, बिना आलस्य के, बिना विलंब किए उसे अपने उस कार्य को करना ही चाहिए। आलस्य के वशीभूत होकर खुद भी और दूसरों को भी सृष्टि के नियमों से विलग चलने के प्रयास से बचाव करना चाहिए। किसी भी संकट से खुद भी और दूसरों को भी बचाना चाहिए।

विश्वे देवासो असुर॒ सुतमा गन्त तुणीय॒।
उस्त्रा इव वसराणि?।। (ऋ01/03/08)

हे (असुरः) मनुष्यों को सुंदर, सुगठित सभी कार्य को करने में योग्य शरीर और विद्या, ज्ञान, बल आदि देने वाले और (तूर्णयः) उस विद्या आदि के प्रकाशित, उपयोग में लाने हेतु योग्य बनाने वाले, समर्थ करने वाले, कार्यों को करवाने में शीघ्रता करने वाले, (विश्वेदेवासः) सभी विद्वान् लोग जैसे (स्वसराणि) दिनों को प्रकाशित करने के लिये, प्रकाशवान बनाने के लिए, दूसरों को जीवन प्रदान करने वाले (उस्त्राइव) सूर्य और किरणें आती जाती हैं वैसे ही आप भी मनुष्यों के समीप (सुतम्), उनके कर्म-उपासना हेतु प्रोत्साहित करने, जगाने, बल प्रदान करने और ज्ञान को प्रकाशवान बनाने के लिए (आगन्त) नित्य आया जाया करें। (महर्षि दयानंद)। जिस प्रकार मेघ जल बरसा कर धरा पर अन्न की वृद्धि करते हैं, वायु अपने कार्य को करते हुए सभी को जीवन प्रदान करते हैं उसी प्रकार शिल्प विद्या में माहिर, कला के ज्ञाता को भी (शिल्प और कला को एक मैं इस लिए कह रहा हूँ क्योंकि वेदों में कला की शुरुआत शिल्प के ही रूप में हुई है) अपने कर्तव्यों का पालन बेहिचक और तीव्रता के साथ करना चाहिए। कलाकृतियों से धरा को, लोगों को, समृद्ध बनाना चाहिए। कलाकृतियों के साथ को व्याकुल दुनिया हमेशा से रही है, उसके गुण को महत्व देते आई है, उसी प्रकार कलाकार भी हमेशा से ही, सृजन के साथ से ही सृजनशील रहा है। ऋभुगण हेतु आए मंत्र-

तक्षन्नासत्याभ्यां परिज्मानं सुखं रथम्। (ऋ 01/20/03)

में जहाँ इसी के एक मंत्र पहले ही शिल्पी को विद्वान भी कहा गया है, जहाँ इस मंत्र में

सदा सत्य व्यवहार से युक्त, कुशलतापूर्वक सभी के उपयोग हेतु सभी ओर जाने वाले उत्तम, साधन युक्त, सुखप्रद, अवकाश युक्त रमण साधन रथ आदि यान बनाने की बात है (जयदेव शर्मा), जहाँ शिल्पियों के रूप में कलाकार पहले से ही उपस्थित रहे हैं, जहाँ कलाकारों को श्रेष्ठ माना गया है, जैसी बातें आम हैं। भारतीय कला में भारतीय वेदों, ग्रंथों की महती भूमिका रही है। आज कलाकृतियां आधुनिकता का वस्त्र ओढ़े कितने भी दंभ के साथ आगे बढ़ने की बात करती हों परन्तु सच तो ये है कि सभी कलाकृतियां अपने समय की आधुनिक ही होती हैं। भारत की थाती हमेशा से कला को लेकर सम्पन्न रही है। कलाकारों, वेदों में शिल्पकारों पर भी बहुत कुछ लिखा, रचा गया है।

उत त्यं चमसं नवं त्वष्टुर्देवस्य निष्कृतम्। अकर्त चतुर॒ पुनः ।। (ऋ 01/20/06)

मंत्र में विद्वान् लोग जो (त्वष्टुः) शिल्पी, कारीगर, कलाकार (देवस्य) विद्वान् के द्वारा (निष्कृतम्) सिद्ध किया हुआ काम, सृजित करी हुई कृति, सुख देनेवाला होता है, आनंद दायक है, (त्यम्) उस (नवम्) नवीन दृष्टिगोचर कर्म को देखकर, सृजित किए हुए कृतियों को देखकर (उत) निश्चय से (पुनः) उसके अनुसार फिर (चतुरः) भू, जल, अग्नि और वायु से सिद्ध होनेवाले शिल्पकामों को (अकर्त्त) अच्छी प्रकार सिद्ध करते हैं, तब आनन्दयुक्त होते हैं (महर्षि दयानंद), की बात है। समझदार मनुष्य, चेतन प्रधान लोग कुशल कारीगर, कलाकार, विशिष्ट जन के पास बैठकर, साथ रहकर, कृतियों के निर्माण प्रक्रिया को समझ कर, सृजनशीलता को देख परख कर, खुद को भी उस स्तर तक ले जा सकने में सफल हो सकते हैं। उनके शिल्प कार्यों को देखकर उनका अनुसरण कर और भी कृतियों का निर्माण कर सकते हैं और सृष्टि के क्रियान्वयन में संसाधनों की सुलभता को और समृद्ध बना सकते हैं की बात है, में कला, कलाकार और उसकी जरूरतों पर बल को दर्शाया गया है कहना गलत न होगा कि हमारे वेदों में शुरू से ही शिल्पियों, शिल्पों पर गहनता से अध्ययन और चर्चा होना शुरू हो चुका था फिर नाहक ही हम पाश्चात्य को श्रेष्ठता का जामा पहनाने पर लगे हुए हैं। अब समय आ गया है कि हम भारतीयों को इससे बाहर निकलना ही होगा, पहचानना होगा खुद को और खुद के अस्तित्व को जिसपर हमेशा से कुछ विशेष लोगों द्वारा कुठाराघात करने का प्रयास किया गया है।

अधारयन्त वह्नयोऽभजन्त सुकृत्यया। भागं देवेषु यज्ञियम्।। (ऋ 01/20/08)

यज्ञ के लिए उपयोगी चमस आदि का निर्माण करने के कारण ऋभुगण मरणधर्मा होने पर भी अमर बन गए हैं। वे अपने सत्कर्मों के कारण देवों के मध्य बैठकर यज्ञ का भाग प्राप्त करते हैं। (ऋ 01/20/08) इसी मंत्र पर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी कहते हैं कि जो (वह्नयः) संसार में शुभकर्म वा उत्तम गुणों को प्राप्त करानेवाले बुद्धिमान् सज्जन पुरुष (सुकृत्यया) श्रेष्ठ कर्म से (देवेषु) विद्वानों में रहकर (यज्ञियम्) यज्ञ से सिद्ध कर्म को (अधारयन्त) धारण करते हैं, वे (भागम्) आनन्द को निरन्तर (अभजन्त) सेवन करते हैं जबकि रामगोविन्द त्रिवेदी (सायण भाष्य के आधार पर) लिखते हैं कि यज्ञ के वाहक ऋभुगण मनुष्य-जन्म ले चुकने पर भी अविनाशी आयु प्राप्त किये हुए हैं और अपने सत्कर्म-द्वारा देवों के बीच यज्ञ-भाग का सेवन करते हैं। जो (वह्नयः) संसार में शुभकर्म वा उत्तम गुणों को प्राप्त करानेवाले बुद्धिमान् सज्जन पुरुष (सुकृत्यया) श्रेष्ठकर्म से (देवेषु) विद्वानों में रहकर (यज्ञियम्) यज्ञ से सिद्ध कर्म को (अधारयन्त) धारण करते हैं, वे (भागम्) आनन्द को निरन्तर (अभजन्त) सेवन करते हैं॥8॥ मनुष्यों को योग्य है कि अच्छे कर्म वा विद्वानों की सङ्गति तथा पूर्वोक्त यज्ञ के अनुष्ठान से व्यवहारसुख से लेकर मोक्षपर्य्यन्त सुख की प्राप्ति करनी चाहिये॥8॥ उन्नीसवें सूक्त में कहे हुए पदार्थों से उपकार लेने को बुद्धिमान् ही समर्थ होते हैं।

कलाकारों एवं शिल्पियों को भी इन पंक्तियों से अलग नहीं किया जा सकता।

ये महो रजसो विदुर्विश्वे देवासो अद्रुहः।
मरुद्भिरग्न आ गहि॥ (ऋ 01/19/03)

(ये) जो (अद्रुहः) किसी से द्रोह न रखनेवाले (विश्वे) सब (देवासः) विद्वान् लोग हैं, जो कि (मरुद्भिः) पवन और अग्नि के साथ संयोग में (महः) बड़े-बड़े (रजसः) लोकों को (विदुः) जानते हैं, वे ही सुखी होते हैं। हे (अग्ने) स्वयंप्रकाश होनेवाले परमेश्वर ! आप (मरुद्भिः) पवनों के साथ (आगहि) विदित होइए और जो आपका बनाया हुआ (अग्ने) सब लोकों का प्रकाश करनेवाला भौतिक अग्नि है, सो भी आपकी कृपा से (मरुद्भिः) पवनों के साथ कार्य्यसिद्धि के लिये (आगहि) प्राप्त होता है॥3॥ जो विद्वान् लोग अग्नि से आकर्षण वा प्रकाश करके तथा पवनों से चेष्टा करके धारण किये हुए लोक हैं, उनको जानकर उनसे कार्य्यों में उपयोग लेने को जानते हैं, वे ही अत्यन्त सुखी होते हैं॥3॥

ये नाकस्याधि? रोचने दिवि देवास? आसते।
मरुद्भिरग्न आ गहि॥(ऋ 01/19/06)

(ये) जो (देवासः) प्रकाशमान और अच्छे-अच्छे गुणोंवाले पृथिवी वा चन्द्र आदि लोक (नाकस्य) सुख की सिद्धि करनेवाले सूर्य्य लोक के (रोचने) रुचिकारक (दिवि) प्रकाश में (अध्यासते) उन के धारण और प्रकाश करनेवाले हैं, उन पवनों के साथ (अग्ने) यह अग्नि (आगहि) सुखों की प्राप्ति कराता है॥6॥ सब लोक परमेश्वर के प्रकाश से प्रकाशमान हैं, परन्तु उसके रचे हुए सूर्य्यलोक की दीप्ति अर्थात् प्रकाश से पृथिवी और चन्द्रलोक प्रकाशित होते हैं, उन अच्छे-अच्छे गुणवालों के साथ रहनेवाले अग्नि को सब कार्य्यों में संयुक्त करना चाहिये॥6॥ या जिस प्रकार प्रकाशमान सूर्य के आश्रय पर जो पृथ्वी, चन्द्र अन्यान्य लोक आदि या प्रकाश की किरणें हैं उनके साथ ही सूर्य उदय होता है उसी प्रकार सुख युक्त राष्ट के ऊपर अधिष्ठाता रूप से विद्यमान स्वयं ज्ञानवान, तेजस्वी, सर्वोपरी ज्ञानप्रद राजसभा में जो विद्वान पुरुष विराजते हैं उन राष्ट के प्राण स्वरूप विद्वान पुरुषों के साथ से अग्रणी तेजस्विन नायक तूं हमें प्राप्त हो। ऋग्वेद में ऐसे ही ऋभुओं और त्वष्टा के लिए और भी तमाम मंत्र रचे गए हैं जहां कला के होने को बल मिलता है। चित्र साभार गूगल से है।

विज्ञान और नवाचार कैसे आर्थिक विकास के प्रेरक

नोबेल

आतिफ़ रब्बानी

असिस्टेंट प्रोफ़ेसर (अर्थशास्त्र), भीमराव आंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुज़फ़्फ़रपुर

साल 2025 में अर्थशास्त्र का नोबेल पुरस्कार नवाचार के नाम रहा। यह पुरस्कार उन शोधकर्ताओं के हिस्से में आया, जिन्होंने यह दिखाया कि कैसे विज्ञान और नवाचार आर्थिक विकास को प्रेरित करते हैं। प्रख्यात अर्थशास्त्री जोएल मोकीर, फिलीप आगियन और पीटर हॉविट को आर्थिक संवृद्धि में नवाचार की भूमिका और रचनात्मक विनाश के जरिए विकास को बढ़ावा देने पर किए गए कार्य के लिए दिया गया।

अर्थशास्त्र के नोबेल को औपचारिक रूप से 'स्वेरिजेस रिक्सबैंक प्राइज़ इन इकोनॉमिक साइंसेज़ इन मेमोरी ऑफ़ अल्फ्रेड नोबेल' कहा जाता है। पुरस्कार समिति के अनुसार इन तीनों शिक्षाविदों को 'नवाचार-प्रेरित आर्थिक विकास की व्याख्या करने के लिए' प्रदान किया गया। इस पुरस्कार का आधा भाग जोएल मोकीर को प्रदान किया। मोकीर अमेरिका की नॉर्थवेस्टर्न यूनिवर्सिटी एवेनस्टन, इलिनॉय में अर्थशास्त्र के प्राध्यापक हैं। उनका कार्य क्षेत्र वे आर्थिक इतिहास है।

पुरस्कार का शेष आधा भाग संयुक्त रूप से फ़्रांसीसी अर्थशास्त्री फिलीप आगियन और पीटर हॉविट को दिया गया। फिलीप आगियन को 'तकनीकी प्रगति के माध्यम से सतत विकास के लिए आवश्यक पूर्वशर्तों की पहचान करने' के लिए नवाज़ा गया। फ़िलीप फ़्रांसीसी मूल के हैं, वे पेरिस के कॉलेज दि फ्रांस, इनसीड और लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स एंड पॉलिटिकल साइंस, यूनाइटेड किंगडम से संबद्ध हैं। पीटर हॉविट को उनके 'रचनात्मक विनाश के माध्यम से सतत विकास के सिद्धांत के लिए' किए गए कार्य को पुरस्कृत किया गया। हॉविट अमेरिका की ब्राउन यूनिवर्सिटी में अर्थशास्त्र के प्रोफ़ेसर हैं।

जोएल मोकीर, जो डच मूल के आर्थिक इतिहासकार हैं, ने यह दर्शाया कि कैसे औद्योगिक क्रांति और उसके बाद नवाचार के कारण लगातार आर्थिक वृद्धि संभव हुई। वे पिछले चार दशक से लगातार इस क्षेत्र में काम कर रहे हैं। उनकी वर्ष 1990 में प्रकाशित पुस्तक 'द लीवर ऑफ़ रिचेस – टेक्नोलॉजिकल क्रीऐटिवटी एण्ड प्रोग्रेस' विश्व के बौद्धिक तबकों में हाथों-हाथ ली गई। वे अपने शोध से बताते हैं कि तकनीकि पहले भी थी, भले ही बहुत विकसित न हो। लेकिन इस तकनीकि की बदौलत आर्थिक उन्नति के वे रास्ते नहीं तय किए जा सके जैसे कि मौजूदा दौर में। आज के विकसित देशों में वार्षिक 1-2 प्रतिशत की आर्थिक वृद्धि दर सामान्य बात है। लेकिन मध्यकाल के दौर में, पवनचक्की और छापाखाने जैसी तकनीकी खोजों के बावजूद, ऐसी विकास दरें नहीं देखी गईं।

मोकीर ने दिखाया कि उस समय और आज के समय के बीच का जो अंतर आया है, वह 'उपयोगी ज्ञान' की बदौलत है। यह 'उपयोगी ज्ञान' नवाचार है, जो वैज्ञानिक समझ पर आधारित होता है। मिसाल के तौर पर अठारहवीं सदी की औद्योगिक क्रांति भाप इंजनों की बदौलत हासिल हुई। भाप की शक्ति या भाप इंजनों का आविष्कार तो सत्रहवीं शताब्दी में हो चुका था, लेकिन भाप की शक्ति का व्यवस्थित प्रयोग इंजन में किए गए नवाचार से ही संभव हो सका। जब इसका प्रयोग रेलवे, पानी के जहाज़ और फैक्ट्रियों के चलाने में किया जाने लगा।

फिलीप आगियन और पीटर हॉविट ने 1992 में एक मॉडल प्रस्तुत किया था, जो दिखाता है कि यह पूरी प्रक्रिया वास्तव में 'क्रिएटिव डिस्ट्रक्शन' ही है। उनका मॉडल दिखलाता है कि कैसे नए उत्पाद और वस्तुओं का विपणन करनेवाली कंपनियों के बीच प्रतिस्पर्धा से नवाचार को बढ़ावा मिलता है। इस नवाचार से बाजार में पुरानी वस्तुएँ नए उत्पादों से प्रतिस्थापित होती हैं, जो पहले से बेहतर बेहतर होते हैं। मिसाल के तौर पर म्यूजिक इंडस्ट्री को ही लीजिए। पहले विनाइल रेकॉर्ड्स हुआ करते थे, फिर ऑडियो मैग्नेटिक टेप आए, इसके बाद सीडी का दौर आया, और अब फ्लैश ड्राइव और क्लाउड के जरिए संगीत का विपणन होता है। ज़ाहिर है कि आखिरी दौर तक पहुँचने के लिए पहले की इंडस्ट्रियों का 'डिस्ट्रक्शन' यानी विनाश होना पड़ा। लेकिन इस पूरी प्रक्रिया से नए प्रकार के उद्योग और बेहतर उत्पाद का सृजन हुआ। इसीलिए आगियन और हॉविट ने इसको 'रचनात्मक विनाश' के नाम से पुकारा। हालांकि इनसे बहुत पहले जोसेफ शुम्पीटर ने क्रिएटिव डिस्ट्रक्शन की शब्दावली का प्रयोग अपनी पुस्तक 'कैपिटलिज्म, सोशलिज्म एंड डेमोक्रेसी' में किया था। उनका मानना था कि आर्थिक विकास एक स्थिर संतुलन को तोड़ने वाली नवाचार की प्रक्रिया है। उद्यमी नवाचार के माध्यम से अर्थव्यवस्था में क्रांति लाते हैं, जो नए उत्पादों, उत्पादन विधियों या बाजारों के विकास से होता है। इस नवाचार से अर्थव्यवस्था में चक्रीय उतार-चढ़ाव आते हैं, जो आर्थिक विकास को गति प्रदान करते हैं। दूसरे शब्दों में, विकास के पीछे व्यवसायों और उत्पादों का निरंतर परिवर्तन होता है। इस तरह से आगियन और हॉविट ने शुम्पीटर के सिद्धांत को प्रामाणिकता प्रदान की - अनुभवजन्य आँकड़ों और गणितीय मॉडलों से सिद्ध किया। जो वर्ष 1992 में प्रतिष्ठित जर्नल 'इकोनॉमेट्रिका' में 'ए मॉडल ऑफ़ ग्रोथ थ्रू क्रिएटिव डिस्ट्रक्शन' के शीर्षक से छपा।

आज दुनिया के विकासशील देश आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और ऑटोमेशन जैसी तकनीकी को संशय की दृष्टि से देख रहे हैं। आधुनिक तकनीकि के सामाजिक परिणाम को लेकर ऊहापोह की स्थिति है। वहीं इन नोबेल विजेता अर्थशास्त्रियों काम बताता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता-जैसी तकनीकि के ज़रिए विकास के नए रास्ते खोजे जा सकते हैं। आगियन नैशनल ब्यूरो ऑफ़ इकनॉमिक रिसर्च के एक वर्किंग पेपर 'आर्टिफ़ीशियल इन्टेलिजेन्स एण्ड इकनॉमिक ग्रोथ' में बताते हैं, कृत्रिम बुद्धिमत्ता की बदौलत तकनीकि खोज पहले से कहीं अधिक आसान हो जाएगी। एआई जैसी अच्छी और सुलभ तकनीकि विकास की बड़ी क्षमता रखती है। इसके साथ-साथ वे चुनौती को भी रेखांकित करते हैं। वे कहते हैं, 'एआई की चुनौती यह है कि इस क्षमता को कैसे सही दिशा में लगाया जाए'।

जोएल मोकीर, फिलीप आगियन और पीटर हॉविट के कार्यों से भारत के नीतिकारों को भी सबक़ लेना चाहिए। आर्थिक विकास की इबारत शोध, अनुसंधान और नवाचार के ज़रिए ही लिखी जा सकती है। अनुसंधान और विकास में व्यय के आँकड़े बताते हैं साल दर साल अनुसंधान पर किया गया ख़र्च स्थिर बना हुआ है। आँकड़े बताते हैं कि अनुसंधान और विकास पर किया गया खर्च सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में कभी भी 1 प्रतिशत से भी अधिक नहीं पहुँच सका। देश को विकास के पथ पर अग्रसर करने के लिये तकनीक अवसंरचना और अनुसंधान क्षमताओं को मजबूत करना होगा। इसके लिए वैज्ञानिक अनुसंधान को बढ़ावा देने व वित्त पोषण तंत्र में सुधार करने की भी आवश्यकता है।

इन विजेताओं के कार्य से हम सीख सकते हैं कि हमें प्रगति को हल्के में नहीं लेना चाहिए। समाज को ऐसे तत्वों पर ध्यान देना चाहिए जो विकास को जन्म देते हैं और बनाए रखते हैं, जैसे कि विज्ञान-आधारित नवाचार, रचनात्मक विध्वंस, और परिवर्तन के लिए खुला समाज।

नाम से धोखा मत खाईयेगा यह क्राइम एक्शन थ्रिलर है

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे

लेखक वेबसाइट ई– अन्तर्भव के प्रबंध संचालक हैं ।

भागवत चेप्टर वन राक्षस - शीर्षक सुनकर यह लगता ज़रुर है कि यह कोई मायथोलॉजी जैनर? की फिल्म होगी मगर ऐसा है नहीं । यह एक क्राइम एक्शन थ्रिलर है, जिसका निर्देशन अक्षय शेर ने किया है।फिल्म में अर्शद वारसी ने डीएसपी विश्वास भागवत का चरित्र निभाया है जबकि पंचायत वेबसिरीज़ में सचिव की यादगार भूमिका निभाने वाले जितेन्द्र कुमार समीर की भूमिका में हैं ।इस फिल्म में जितेन्द्र कुमार ने एक जटिल और ग्रे शेड वाली भूमिका निभाकर एक सोची-समझी रिस्क ली हैं। वे अर्शद वारसी के बड़े प्रशंसक हैं और इसी कारण उन्होंने यह भूमिका स्वीकार की। उनका मानना है कि बेशक, कुछ ऐसी चीज़ें होती हैं जो दर्शकों से जुड़ जाती हैं लेकिन एक कलाकार की छवि कितनी भी मज़बूत क्यों न हो दर्शक उसमें बदलाव चाहते हैं।

पुलिस अधिकारी बने विश्वास भागवत (अरशद वारसी) सस्पेंस से भरे एक केस की जाँच कर? रहे होते हैं इसी बीच उनका तबादला राबर्ट्सगंज हो जाता है ।वहाँ, पूनम मिश्रा नाम की लड़की रहस्यमय ढंग से लापता हो जाती है, जिसके बाद राजनीतिक बयानबाजी, धर्म परिवर्तन की बहस और भीड़ की हिंसा शुरू होती है। विश्वाह जब गहराई में जांच करते हैं तो उन्हें पता चलता है कि कौशल्या, संतोष, संध्या जैसी कई लड़कियां पिछले कुछ महीनों में इसी तरह गायब हुई हैं।हर केस की कहानी लगभग एक जैसी – रोजमर्रा की जिंदगी से निकलना और फिर रहस्यमय तरीके से गायब हो जाना। इसी बीच बनारस में समीर और मीरा की प्रेम कहानी चल रही होती है, जो शुरुआत में मासूम लगती है लेकिन धीरे-धीरे डरावना रूप ले लेती है। फिल्म का क्लाइमैक्स यह साफ कर देता है कि यह मामला धर्म या राजनीति का नहीं, बल्कि इंसान के भीतर छिपे अंधेरे का है ।

निर्देशन के नज़रिये से अक्षय शेरे ने फिल्म की पृष्ठभूमि और टोन को वास्तविक बनाए रखने की कोशिश की है।रॉबर्ट्सगंज और बनारस के लोकेशंस कहानी को जमीन से जोड़ते हैं। हालाँकि कहानी का प्रवाह बीच में धीमा पड़ता है, जिससे सस्पेंस का प्रभाव कम हो जाता है। हेमल कोठारी का सम्पादन थोड़ा और कहा हुआ होता तो फिल्म और प्रभावशाली बन सकती थी। सुमित सक्सेना के संवाद यथार्थवादी हैं, लेकिन कुछ जगहों पर एक्सपोज़िशन अधिक लगता है। मंगेश धाकड़े का बैकग्राउंड म्यूजिक फिल्म की ताकत है। जाँच, डर और रहस्य से भरे दृश्यों में रह संगीत माहौल बनाता है। कच्चा काचा आम और गवाही दे जैसे गाने कहानी में

भावनात्मक गहराई लाने की कोशिश करते हैं। दृश्य रूप से फिल्म में पूर्वांचल की गलियों, मंदिरों और शहर की बेचैनी को सही ढंग से दिखाया गया है।

भागवत और दहाड़ दोनों ही गायब होती लड़कियों और समाज में फैलती बेचैनी पर केंद्रित हैं। लेकिन जहां दहाड़ ने धीरे-धीरे दर्शकों को भीतर तक झकझोरा, वहीं भागवत का असर सीमित रह जाता है। कहानी का ग्राफ उतार-चढ़ाव भरा है, और कई जगह अनुमानित भी लगने लगता है। ट्विस्ट मौजूद हैं, पर उनकी प्रस्तुति उतनी सशक्त नहीं हो पाई जितनी अपेक्षित थी। कुल मिलाकर फिल्म एक ईमानदार कोशिश है जो समाज के मुद्दों के साथ इंसानी मानसिकता को समझने की कोशिश करती है।विषय नया नहीं, लेकिन ट्रीटमेंट अलग है। फिल्म सोचने पर मजबूर करती है, पर उतना बाँध नहीं पाती। अगर आपको सस्पेंस-ड्रामा पसंद है, तो इसे एक बार देखा जा सकता है – बस उम्मीदें ज़्यादा न रखें।

गीता पर ओपी श्रीवास्तव का व्याख्यान आज

भोपाल। सेवानिवृत आईएएस अधिकारी एवं गीता मर्मज्ञ ओमप्रकाश श्रीवास्तव का गीता पर व्याख्यान 26 अक्टूबर को ऑरो मंदिर तुलसी नगर में होगा। व्याख्यान सुबह 11.30 बजे होगाद्य इस आध्यात्मिक संगोष्ठी का आयोजन श्री अरबिंदो सोसाइटी भोपाल ने किया है।

अवैध कार्बाइड गन बेचने वाला युवक गिरफ्तार, तीन गन जब्त

बैतूल। पुलिस ने अवैध कार्बाइड गन बेचने वाले एक युवक को गिरफ्तार किया है। न्यू बैतूल ग्राउंड स्थित पटाखा बाजार में छापामार कार्रवाई के दौरान यह गिरफ्तारी हुई। कोतवाली पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली थी कि इफ्तेखार नाम का व्यक्ति समीर पटाखा दुकान के पास कार्बाइड गन बेच रहा है। सूचना के आधार पर उप निरीक्षक सिंह धुर्वे के नेतृत्व में टीम ने दबिश दी। मौके पर इफ्तेखार पिता इसामुद्दीन खान (35), निवासी आजाद वार्ड टिकारी बैतूल को पकड़ा गया। तलाशी के दौरान उसके पास से ग्रे रंग की प्लास्टिक पाइप से बनी तीन कार्बाइड गन जब्त की गईं। आरोपी के खिलाफ विस्फोटक अधिनियम की धारा के तहत केस दर्ज किया। बता दे कि कार्बाइड गन का चलन इस साल दीपावली से पहले तेजी से बढ़ा है। यह गन कैल्शियम कार्बाइड और पानी के रासायनिक मिश्रण से गैस बनाकर तेज ध्वनि उत्पन्न करती है, जो धमाके जैसी आवाज करती है। इसके उपयोग से आंखों, कानों और फेफड़ों पर गंभीर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। पुलिस अधीक्षक वीरेंद्र जैन ने जनता से अपील की है कि वे कार्बाइड गन या किसी भी प्रकार के असुरक्षित विस्फोटक उपकरणों का उपयोग, भंडारण या बिक्री न करें। ऐसी किसी भी गतिविधि की जानकारी मिलने पर तत्काल नजदीकी थाने या डायल-112 पर सूचित करें।

सप्त शक्ति संगम कार्यक्रम आज

बैतूल। सरस्वती विद्या मंदिर कालापाठा में आज रविवार सप्त शक्ति संगम का आयोजन दोपहर 1 बजे से किया गया है। इस संबंध में सप्त शक्ति संगम की जिला संयोजिका श्रीमती रश्मि साहू ने बताया कि भारतीय नारी मात्र एक व्यक्ति नहीं अपितु एक सम्पूर्ण चेतना है, जो परिवार की आधारशिला समाज की प्रेरणा और राष्ट्र की आत्मा है। भारतीय महिला के भीतर ऐसे अन्तर्निहित गुण विद्यमान हैं जो बाहरी दिखावे से परे होते हुए भी उसे महत्वपूर्ण बनाते हैं, वह घर परिवार की मर्यादाओं की रक्षक, समाज निर्माण की पथप्रदर्शक के साथ माता, पत्नी, बहन, बेटी के रूप में विभिन्न भूमिकाओं में कर्तव्य का अद्भुत समन्वय प्रस्तुत करती है। श्रीमती साहू ने कार्यक्रम में अधिक से अधिक माताओं और बहनों से उपस्थित होने का आग्रह किया है।

किसानों को 5 रूपए में उपलब्ध कराए जा रहे कृषि संयोजन

बैतूल। मप्र शासन के निर्देशानुसार विद्युत वितरण कंपनी द्वारा किसानों को कृषि संयोजन मात्र 5 रूपए में जारी किए जा रहे है। जिससे आगामी रबी सीजन में किसानों को अस्थाई संयोजन की भारी भरकम राशि जमा करने से राहत मिलेगी। मध्यप्रदेश मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी लि. बैतूल व्रत प्रबंधक ने बताया कि वर्तमान में बैतूल वृत के तीनों संभाग अंतर्गत 7388 नंबर नवीन कृषि पंप संयोजन जारी किए गए है। साथ ही घरेलू संयोजन भी 5 रूपए में जारी किए जा रहे है। जिसमें अभी तक 5703 नंबर नवीन घरेलू संयोजन, इस प्रकार कुल 13091नंबर जारी किए जा चुके है। कंपनी द्वारा किसानों से अपील है कि अपने नजदीकी वितरण केंद्र में संपर्क कर 5 रूपए में घरेलू और कृषि संयोजन करवाए। आवश्यक सूचना उपभोक्ता यह है कि बिना किसी संयोजन के अवैध रूप से बिजली का उपयोग करने पर विद्युत अधिनियम 2003 की धारा 135 के तहत कार्रवाई की जाएगी। जिसके एवज में एक भारी भरकम क्षतिपूर्ति राशि चुकाना पड़ सकता हैं, अथवा न्यायालय में प्रकरण दर्ज किया जाएगा। जिसकी राशि समयावधि में भुगतान नहीं करने पर सजा का प्रावधान भी हैं। इसलिए अपने नजदीकी वितरण केंद्रों में पहुंचकर वैध स्थाई, अस्थाई संयोजन, सहज सरल बिजली कनेक्शन योजना के तहत कराकर योजना लाभ उठाएं।

जिला स्वास्थ्य अधिकारी डा. नंदिता निगम की सीएम हेल्पलाइन में प्राप्त शिकायतों का 100 प्रतिशत संतुष्टि पूर्वक निराकरण करने पर मुख्यमंत्री ने सराहना की

धार। मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव ने गत दिवस समाधान आन लाइन में जिला स्वास्थ्य अधिकारी डा. नंदिता निगम की सीएम हेल्प लाइन में प्राप्त शिकायतों का 100 प्रतिशत संतुष्टि पूर्वक निराकरण करने पर सराहना की एवं अन्य जिलों के विभिन्न विभागों के अधिकारियों से भी उनकी ही तरह निष्ठापूर्वक परिश्रम कर सीएम हेल्पलाइन में प्राप्त शिकायतों का शीघ्रता पूर्वक समाधान करने का निर्देश दिया। धार कलेक्टर प्रियंक मिश्र ने डॉ नंदिता निगम के प्रयासों की प्रशंसा की एवं उनके कार्य को अनुकरणीय बताया।

बारिश ने बढ़ाई किसानों की मुश्किलें, कृषि विभाग की सलाह, किसान दर्ज कराये शिकायत

खेतों में कटकर पड़ी फसलें, भिगने से दाना काला होने की आशंका

बैतूल। जिले में बारिश ने किसानों की मुश्किलें बढ़ा दी हैं। अनेक खेतों में फसल कटी पड़ी हुई है, ऐसे में बारिश फसल के लिए आफत बन गई। हालात यह है कि आए दिन की बारिश से अब फसल खराब होने की कगार पर पहुंच गई है। बारिश से खेतों में पानी भर गया है और जमीन गीली होने से कटाई का कार्य भी रुक गया है। इससे किसानों को दोहरे नुकसान, उपज की गिरावट और बाजार भाव में कमी का डर सताने लगा है। बता दे कि जिले में खरीफ फसलों की कटाई का समय नजदीक आ चुका है। कहीं-कहीं सोयाबीन और मक्का की कटाई भी शुरू हो चुकी है। किसानों ने फसल काटकर खेतों में रखी है, जहां बारिश के कारण सोयाबीन के दाने दागी होने, फफूंद लगने और दाना काला होने जैसी स्थिति बन सकती है। वैसे भी इस बार अत्यधिक बारिश तथा पीला मोजेक रोग के कारण सोयाबीन का उत्पादन काफी प्रभावित होकर कम होना सामने आया है। अब जबकि सोयाबीन की कटाई का कार्य चल रहा है, इसी बीच एकाएक तेज बारिश का आना कटी फसल के लिए मुसीबत बन गया। किसानों का कहना है कि सोयाबीन की कटाई कर अभी फसल खेत में ही थी कि अचानक बारिश आने से कटी फसल को नुकसान पहुंचा है। कृषि जानकारों के अनुसार यदि और बारिश होती है तो कटी फसल को नुकसान होगा।

बारिश ने बिगाड़ा फसल कटाई का समीकरण

किसानों का कहना है कि इस समय फसल कटाई का उपयुक्त समय था, लेकिन बारिश ने पूरा समीकरण बिगाड़ दिया। किसान विजय, त्रिलोक, किसन ने बताया पिछले दो-तीन दिनों से जिले के विभिन्न क्षेत्रों में बारिश हो रही है। खेतों में पानी भर गया है, जिससे सोयाबीन फसल खराब हो रही है। फसल गीली होने से कटाई करने की स्थिति नहीं है और अगर मौसम ऐसे ही रहा तो दाने सडने लगेंगे। सोयाबीन उत्पादक किसानों ने बताया कि खेतों में खड़ी सोयाबीन की फल्लियों में नमी बनी हुई है, जिससे दाने का रंग काला पड़ सकता है और उसकी गुणवत्ता गिर रही है। किसानों ने बताया कि लगातार नमी और फिर अचानक धूप निकलने से जड़ सडन और पत्तियों के सिकुडने की समस्या सामने आ रही है। कई खेतों में पानी भर जाने से पौधे झुकने लगे हैं, जिससे आगे चलकर कटाई में कठिनाई आ सकती है।

कृषि विभाग ने जारी की अपील, किसान करे शिकायत

कृषि विभाग ने जिले के किसानों से अपील की है कि जिन किसानों ने फसल बीमा कराया है, वह फसल कटाई के 14 दिन बाद तक शिकायत दर्ज करा सकते है। कृषि विभाग का कहना है कि यदि फसल खेत में पड़ी है। सूख रही है और फसल खराब की स्थिति बनती है तो फसल कटाई के 14 दिन तक फसल बीमा का कवरेज कायम रहता है। किसान को ऐसा लगा रहा है कि फसल खराब हो रही है, फफूंद लग रही है या नुकसान की आशंका है तो वह अतिवृष्टि की शिकायत दर्ज करा सकता है। बता दे कि अभी तक 14063 किसानों ने सोयाबीन खराब होने की शिकायत दर्ज कराई है, जिसमें से 13250 शिकायते विभाग ने निराकृत कर दी है। वर्तमान की शिकायतों का भी विभाग निराकरण कर रहा है।

जिले में 1009 मिमी बारिश, औसत से 3 इंच कम .

वैसे तो 30 सितंबर तक बारिश का मौसम रहता है, लेकिन इस बार अक्टूबर में भी पानी बरस रहा है। जिले में अब तक लगभग 1030 मिमी बारिश हो चुकी है, जो कि औसत से 2 इंच कम है। पिछले एक सप्ताह पूर्व भी जिले के कई क्षेत्रों में बारिश दर्ज की गई थी। जबकि गत वर्ष इस अवधि 1064.3 मि.मी.औसत वर्षा दर्ज की गई थी। शनिवार को भी जिला मुख्यालय पर दोपहर में तेज बारिश हुई। जानकारी के अनुसार इस दौरान करीब 18 मिमी बारिश दर्ज की गई। बारिश और हवा चलने से मौसम में ठंडक घुल गई। वहीं रात का तापमान नीचे जाने का अनुमान है।

इनका कहना है –

आज ही बारिश काफी तेज हुई है। आगे इस बात पर निर्भर करेगा कि मौसम कैसे रहता है। यदि मौसम खुल जाता है, तो बारिश का पानी सूख भी जायेगा। अगर फसल कटकर रखी है तो दाना दागी होने, फफूंद लगने जैसी स्थिति बन सकती है। आज बारिश की स्थिति को देखकर फिलहाल यह नहीं कहा जा सकता है।

– डॉ. आनंद बडोनिया, उप संचालक, कृषि विभाग बैतूल

72 में सिर्फ 51 किमी बना फोरलेन, फिर भी टोल वसूली चालू

गडकरी को घेरने पहुंचे कांग्रेसी, लगाया आरोप, जनता को लूट रही सरकार

बैतूल। बैतूल-ओबेदुल्लागंज राष्ट्रीय राजमार्ग पर अधूरे, जर्जर और खस्ताहाल सडक़ निर्माण के बावजूद टोल वसूली का सिलसिला जारी है। नियमों के विरुद्ध चल रही इस वसूली के खिलाफ शनिवार को कांग्रेस जिला अध्यक्ष निलय डागा ने मोर्चा खोल दिया। निलय डागा दोपहर 2 बजे केंद्रीय सडक़ परिवहन मंत्री नितिन गडकरी को कुंडी टोल प्लाजा पर ज्ञापन देने पहुंचे, लेकिन उन्होंने ज्ञापन लेने से इनकार कर दिया। इस पर डागा ने तीखा कटाक्ष करते हुए कहा कि सच्चाई का सामना करने से डरते हैं गडकरी जी, क्योंकि ज्ञापन में सरकार की असलियत दर्ज है।

उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार जनता से धोखाधड़ी कर रही है। सडक़ निर्माण कार्य 70 प्रतिशत भी पूरा नहीं हुआ, फिर भी पूरा टोल टैक्स वसूला जा रहा है। टोल गाइडलाइन के अनुसार 60 किलोमीटर की दूरी के बाद ही वसूली का नियम है, लेकिन यहां 30 किलोमीटर के दायरे में दो-दो टोल प्लाजा बनाकर खुलेआम नियमों की धज्जियां उड़ाई जा रही हैं। जनता अधूरे रोड, गड्ढों और जाम से परेशान है, जबकि निजी कंपनियां और ठेकेदार सरकार की शह पर जनता की जेब खाली कर रहे हैं। निलय डागा ने कहा कि कांग्रेस इस जनविरोधी लूट का पुरजोर विरोध करेगी। बैतूल से ओबेदुल्लागंज के बीच अधूरे फोरलेन पर वसूली बंद नहीं की गई तो आंदोलन को जिला स्तर से बढ़ाकर प्रदेश और फिर राष्ट्रीय स्तर पर ले जाया जाएगा। उन्होंने कहा कि भाजपा के राज में विकास की बातें सिर्फ भाषणों में होती हैं, जमीनी सच्चाई यह है कि जनता परेशान है और सरकार आंख मूंदे बैठी है। कांग्रेस जिला अध्यक्ष निलय डागा ने बताया कि बैतूल-भोपाल हाईवे पर स्थित कुंडी टोल प्लाजा इस समय जनता के गुस्से और विरोध का केंद्र बन चुका है। उन्होंने कहा कि अधूरे फोरलेन निर्माण, गड्ढों से भरी सडक़ों और घटिया गुणवत्ता के बावजूद सरकार ने टोल वसूली शुरू कर दी है, जो जनता के साथ सीधा अन्याय है। निलय डागा ने बताया कि इस हाईवे का काम वर्षों से अधूरा पड़ा है, ठेकेदार कंपनी मनमर्जी चला रही है और नेशनल हाइवे अथॉरिटी आंख मूंदकर सब कुछ देख रही है। उन्होंने कहा कि जब तक सडक़ का निर्माण कार्य पूर्ण नहीं हो जाता, तब तक किसी भी प्रकार की टोल वसूली पूरी तरह से बंद होनी चाहिए। इस अवसर पर कांग्रेस जिलाध्यक्ष निलय विनोद डागा, प्रदेश कांग्रेस सचिव समीर खान पूर्व विधायक ब्रम्हा भलावी, विधानसभा कांग्रेस प्रत्याशी राहुल उइके, ब्लॉक अध्यक्ष नरेंद्र मिश्रा, नरेन्द्र महतो शिव कुमार मालवीय, पहलवान सिंह ठाकुर सहित सैकड़ों कार्यकर्ता मौजूद थे।

रविवार को बालाजीपुरम में परिवार परिचर्चा

टूटते परिवार और बिखरते समाज को सहेजने की पहल

बैतूल। वर्तमान समय में परिवार जिस तरह टूटन का शिकार हो रहे हैं उससे न सिर्फ समाज का बिखराव बढ़ रहा है बल्कि राष्ट की एकता-अखंडता भी प्रभावित हो रही है। परिवार की रीढ़ की हड्डी मानी जाने वाली गृहलक्ष्मी को सम्मान न मिलना भी इसकी एक बड़ी वजह है। वर्तमान समय में ऐसी गृहलक्ष्मी मिलना मुश्किल है जो सिर्फ अपने बच्चे और पति ही नहीं अपितु पूरे परिवार को साथ लेकर चलें और उन्हें सशक्त, समृध्द बनाने में मदद करें।

इन्हीं सभी मुद्दों को लेकर एक सेमीनार का आयोजन भारत के पांचवेधाम श्री रूकमणि बालाजी मंदिर बालाजीपुरम बैतूल में किया जा रहा है। इस संबंध में समाजसेवी सुनील व्दिवेदी ने बताया कि रविवार 26 अक्टूबर को बालाजीपुरम में परिवार परिचर्चा का आयोजन सुबह 10 बजे से होगा। इसमें सभी सामाजिक संस्थाओं के प्रमुख, मंदिर और धार्मिक संस्थानों के प्रमुख, स्कूल-कालेजों के प्रमुख और विभिन्न समाजों के प्रमुख शामिल होंगे और अपनी बात रखेंगे। इसके साथ ही भोपाल और नर्मदापुरम से वरिष्ठ वक्तागण भी आकर अपनी बात रखेंगे। इस बैठक में बालाजीपुरम व्दारा गृहलक्ष्मी को संस्कारित और सम्मानित करने के अभिनव अभियान पर विचार-विमर्श होगा।

टमाटर उत्पादन में देश में नंबर-1 है मप्र

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि प्रदेश के सब्जी उत्पादक किसानों को सरकार की प्रोत्साहन योजना का भरपूर लाभ मिल रहा है।

कैश क्राप प्रोडक्शन को किसानों ने हाथों-हाथ लिया है। यही कारण है कि सबके किचन की डेली नीड टमाटर के उत्पादन में मध्यप्रदेश पूरे देश में पहले स्थान पर है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्यम उन्नयन (पीएमएफएमई-पीएमएफएमई) योजना के माध्यम से टमाटर की फसल पर आधारित लघु उद्योगों को व्यापक स्तर पर प्रोत्साहन मिल रहा है। टमाटर के बीज पर सरकार द्वारा किसानों को 50 प्रतिशत तक अनुदान दिया जा रहा है।

इस अनुदान से किसानों को बड़ा संबल मिल रहा है। योजना का लाभ लेकर हमारे किसान भाई आत्मनिर्भर बनकर समृद्धि की ओर बढ़ रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने प्रदेशवासियों को छठ पूजा आरम्भ की दी शुभकामनाएं

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रदेशवासियों को छठ पूजा आरम्भ होने पर हार्दिक शुभकामनाएं दी हैं।मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि संतान की मंगलकामना एवं परिवार की खुशहाली के लिए समर्पण व त्याग की पराकाष्ठा के पर्व छठ पूजा के पहले दिन की सभी को बधाई। उन्होंने छठी मैया और सूर्य देव से प्रार्थना की है कि ममता की प्रतिमूर्ति माताओं की कामनाएं पूर्ण करें और सभी के जीवन में सुख, समृद्धि एवं सम्पन्नता की उत्तरोत्तर वृद्धि करें।

त्रिमूर्ति नगर में भक्ति की लहर, भव्य कलश यात्रा के साथ श्री भविष्य महापुराण कथा का शुभारंभ

धार। श्रीसांवरिया सेठ मंदिर, त्रिमूर्ति नगर, धार में 18 महापुराण समिति के तत्वावधान में आयोजित 'श्री भविष्य महापुराण' कथा का शुभारंभ भव्य कलश यात्रा के साथ हुआ। इस धार्मिक महोत्सव ने पूरे क्षेत्र को आस्था और भक्ति के रंग में सराबोर कर दिया।

शनिवार को प्रातः 11 बजे श्री सांवरिया सेठ मंदिर से भव्य कलश यात्रा आरंभ हुई। यात्रा में भक्त जन पीले वस्त्र, धारण की हुई महिलाएं सिर पर कलश लिए और पारंपरिक धोती-कुर्ता पहने पुरुष वर्ग, डीजे की धुन पर भाव-विभोर होकर नृत्य करते हुए चल रहे थे। व्यास पीठ पर विराजित भागवतचार्य पंडित श्री रमाकांत जी व्यास का रथ में बिठाकर भव्य स्वागत किया गया।

कलश यात्रा का त्रिमूर्ति नगर में जगह-जगह पुष्प वर्षा कर अभूतपूर्व स्वागत किया गया। समिति के अध्यक्ष श्री स्वयं प्रकाश सोनी और सरोज सोनी ने अपने निवास पर पंडित जी का पुष्पमाला एवं श्रीफल भेंट कर स्वागत किया, जहाँ श्रद्धालुओं ने भक्तिमय नृत्य किया। समिति के प्रमुख सदस्य संतोष पांडे के निवास पर भी यात्रा का गुलाब के पुष्पों से भव्य स्वागत किया गया।

शोभा यात्रा के पश्चात, दोपहर 3 बजे कथा का वाचन प्रारंभ हुआ। कथा के प्रथम दिवस पर व्यास पीठ से पंडित रमाकांत जी व्यास ने भविष्य पुराण के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने सुखदेव जी और राजा परीक्षित की कथा के माध्यम से गुरु-शिष्य परंपरा के महत्व को समझाया और कहां की भविष्य पुराण में भगवान विष्णु और सूर्य देव की कथा आई है,और भगवान की महिमा व आध्यात्मिक ज्ञान पर विस्तार से प्रकाश डाला। कथा से पूर्व विद्वान पंडितों द्वारा पूजन-अर्चन एवं तर्पण का कार्य भी संपन्न कराया गया।इस भव्य आयोजन में 18 महापुराण समिति के अध्यक्ष स्वयं प्रकाश सोनी, समिति प्रमुख अशोक मनोहर जोशी, रितेश शर्मा, माया शर्मा, राजेंद्र प्रसाद शर्मा, जगतपाल सिंह, युवा पार्षद अजीत जैन (सपत्नीक), शिव शंकर वर्मा, ओमप्रकाश सोलंकी, जगदीश जोशी सहित समिति के अनेक सदस्यगण एवं त्रिमूर्ति नगर के बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

समिति प्रमुख अशोक मनोहर जोशी ने बताया कि 18 महापुराण समिति द्वारा वर्ष में दो बार महापुराण का आयोजन किया जाता है इसी अनुक्रम में यह नवम महापुराण के रूप में भविष्य महापुराण सुनाई जा रही है। शोभायात्रा में त्रिमूर्ति नगर के रहवासियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और कथा को लेकर सभी में अभूतपूर्व उत्साह देखने में आया।उक्त जानकारी दशरथ सिग्गा कोषाध्यक्ष ,डॉ. अशोक शास्त्री (मीडिया प्रभारी)18 महापुराण समिति, धार द्वारा दी गई।

जिला रेडक्रॉस सोसायटी की प्रबंध समिति की बैठक कलेक्टर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई

धार। जिला रेडक्रॉस सोसायटी की प्रबंध समिति की बैठक कलेक्टर प्रियंक मिश्रा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई उन्होंने सर्वप्रथम नवगठित सदस्यों का परिचय प्राप्त कर आगामी दिनों में रेडक्रॉस सोसायटी द्वारा किए जाने वाले कार्यों पर विस्तृत चर्चा की । प्रमुख रूप से जिले के साथ सभी ब्लॉक पर प्रतिमाह रक्तदान शिविर का आयोजन करना , सिकलसेल एनीमिया के उन्मूलन में रेडक्रॉस की सहभागिता हो इस हेतु जन अभियान , पम्पलेट के माध्यम से जागरूकता करना , धार में नशा मुक्ति केन्द्र स्थान चयनित कर खोलना , संस्था के पास उपलब्ध स्थान पर रेडक्रॉस ऑफिस का संचालन करना ,प्रत्येक तहसील पर रेडक्रॉस की उपसमिति गठित करना,तहसील स्तर पर नवीन शव वाहन क्रय कर सभी स्थान पर उसका संचालन करना इस हेतु भोपाल मुख्यालय पर पत्र लिखा जाना तथा स्थानीय स्तर पर विधायक एवं सांसद को पत्र लिखकर उनकी निधि से शव वाहन क्रय की प्रक्रिया किया जाना प्रस्तावित इसके लिए रेडक्रॉस के जिला प्रतिनिधि विशाल निगम को नियुक्त किया गया ।

आगामी माह में मांडू उत्सव में रेडक्रॉस की सहभागिता सुनिश्चित की जाना तथा आगामी दिनों में महत्वपूर्ण दिवसों की कार्य योजना बनाकर कार्य किया जाना प्रस्तावित ।बैठक में प्रमुख रूप से जिला रेडक्रॉस सोसायटी के सचिव डॉं. रमाकांत मुकुट जिला प्रतिनिधि विशाल निगम कोषाध्यक्ष डॉं. आर. के. शिंदे,सदस्य छोटू शास्त्री ,पंकज जैन, शैलेंद्र तिवारी ,अंतरसिंह यादव जिला कोषालय अधिकारी आदि उपस्थित रहे । जानकारी संस्था के सचिव डॉ. रमाकांत मुकुट द्वारा दी गई ।

'महावतार' की शूटिंग शुरू करेंगे विकी कौशल

विकी कौशल इन दिनों अपनी अपकमिंग फिल्म 'लव एंड वॉर' की शूटिंग में बिजी चल रहे हैं। लेकिन, उनके पास कई प्रोजेक्ट्स मौजूद हैं। एक्टर के पास महाकाव्य 'महावतार' भी है, जिसकी शूटिंग को लेकर बड़ी अपडेट सामने आई। स्त्री, भेड़िया, स्त्री-2 और 'बाला' जैसी फिल्मों के निर्देशक अमर कौशिक अपनी अगली अपकमिंग फिल्म 'महावतार' को लेकर सुर्खियों में हैं। वे यह फिल्म विक्की कौशल के साथ बना रहे हैं। हाल ही में उन्होंने इस फिल्म के बारे में बात की है। वास्तव में यह फिल्म परशुराम पर केंद्रित है।

मशहूर फिल्म निर्माता अमर कौशिक ने अपनी आगामी पौराणिक महाकाव्य 'महावतार' के बारे में खुलकर बात की। इस बड़े प्रोजेक्ट में विकी कौशल लीड रोल में काम करते हुए नजर आएंगे। डायरेक्टर ने इस फिल्म को अपने करियर की सबसे निजी और आध्यात्मिक रूप से महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट में से एक बताया है। ऐसा प्रोजेक्ट जिसके बारे में उनका मानना है कि यह ईश्वर की देन है।

अमर कौशिक ने बताया कि 'महावतार' को बनाने में कई साल लग गए और यह अरुणाचल प्रदेश में बिताए उनके बचपन के अनुभवों से प्रेरित है। डायरेक्टर ने कहा कि यह फिल्म मेरे करियर में मेरे लिए एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है। यह ईश्वर की कृपा से मिली है। क्योंकि, यह किरदार बचपन से ही मेरे साथ रहा है। हम अरुणाचल प्रदेश में परशुराम कुंड के पास रहते थे और अक्सर वहां जाते थे। यह हमारे घर की एक रस्म थी, और हर बार वहां जाना मुझे बहुत रोमांचित करता था ,

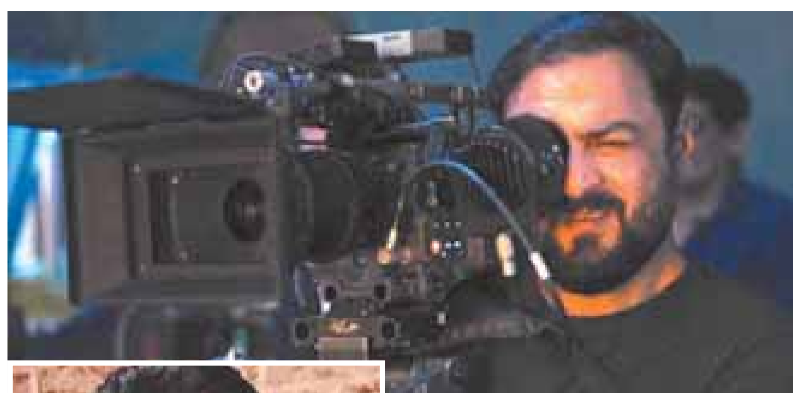

फिल्म निर्माता ने बताया कि वह हमेशा से इस कहानी को बताना चाहते थे, लेकिन शुरुआत में उन्हें इस बात को लेकर थोड़ी दिक्कत हुई कि इसकी भव्यता को बड़े पर्दे पर कैसे उतारा जाए। उन्होंने बताया कि मुझे समझ नहीं आ रहा था कि इसे कैसे पेश किया जाए। क्योंकि, इसके लिए काफी संसाधनों और व्यापक वीएफएक्स की ज़रूरत थी। मैं यह भी सुनिश्चित करना चाहता था कि यह मेरे मन में बने विज़न के अनुरूप रहे। इस प्रोजेक्ट की तैयारियां पहले से ही चल रही हैं, जिसमें सेट डिज़ाइन और कॉस्ट्यूम का काम भी शामिल है।

अमर कौशिक ने इंटरव्यू में कहा कि हम पिछले छह-सात महीनों से तैयारी कर रहे हैं। सेट डिजाइन, हथियारों के कॉन्सेप्ट और किरदारों के लुक पर काम चल रहा है। स्क्रिप्ट पूरी हो चुकी है, लेकिन हमें थोड़ा और वक्त चाहिए। उन्होंने बताया कि विक्की कौशल अपनी बाकी फिल्में पूरी करने के बाद 'महावतार' की तैयारी शुरू करेंगे। निर्देशक के अनुसार, फिल्म की शूटिंग अगले साल के मध्य में शुरू होने की संभावना है। निर्माता के रूप में उनकी परियोजना 'शक्ति शालिनी' है, जो हॉरर-कॉमेडी जगत की आगामी फिल्म है। 'सैयारा' स्टार अनीत पड्डा 'शक्ति शालिनी' में मुख्य भूमिका निभा में नजर आएंगी।

फिल्म निर्माता ने बताया कि वह एक थ्रिलर और एक रोमांटिक फिल्म भी बनाना चाहते हैं। अमर कौशिक ने 2018 में रिलीज हुई अपनी पहली फिल्म 'स्त्री' का जिक्र करते हुए कहा कि मैं 'महावतार' पर काम कर रहा हूं और मैंने 'बाला' का निर्देशन किया। मैं अन्य फिल्मों का निर्माण भी कर रहा हूं। लेकिन मैं (हॉरर-कॉमेडी) की दुनिया को नहीं छोड़ सकता। क्योंकि, लोगों ने इसे बहुत प्यार दिया है। मैं उस जिम्मेदारी को नजरअंदाज नहीं कर सकता। एक निर्देशक के तौर पर मैं बहुत कुछ करना चाहता हूं। मैं 80 साल की उम्र तक काम करते रहना चाहता हूं।

डायरेक्टर को उम्मीद है कि इसकी शूटिंग साल 2026 में शुरू हो जाएगी। विकी कौशल फिलहाल अपने कई प्रोजेक्ट्स को लेकर बिजी चल रहे हैं। उनकी फिल्मों की शूटिंग पूरी होते ही, इसपर काम शुरू किया जाएगा। अमर ने विकी की तारीफ करते हुए उन्हें इस भूमिका के लिए एकदम सही ऑप्शन बताया। डायरेक्टर ने विकी के लिए कहा कि जब भी मैं उनसे मिलता हूं, मुझे उनमें बहुत पवित्रता नज़र आती है। वह इस किरदार को निभाने के लिए सबसे सही व्यक्ति हैं। अमर कौशिक अपनी मैडॉक फिल्म्स की हॉरर-कॉमेडी दुनिया के लिए हमेशा चर्चा में रहते हैं।

प्रभास की फिल्म में इस पुलिसवाले की एंट्री

सुपरस्टार प्रभास के जन्मदिन के मौके पर मेकर्स ने 'स्पिरिट' का साउंड टीजर रिलीज किया। फैन्स इस सरप्राइज को पाकर खुशी से फूले नहीं समा पा रहे हैं। साउंड टीजर के जरिए संदीप रेड्डी वांगा ने फिल्मो की स्टार कास्ट से भी पर्दा उठा दिया है। प्रभास की फिल्म में रोहित शेट्टी की वेब सीरीज के पुलिसवाले की भी एंट्री हुई, जिनका नाम देखने के बाद फैंस की एक्साइटमेंट का लेवल बढ़ गया।

जिस एक्टर की बात हो रही हैं, वो कोई और नहीं बल्कि विवेक ओबेरॉय हैं। वे निर्देशक संदीप रेड्डी वांगा की बहुप्रतीक्षित एक्शन ड्रामा 'स्पिरिट' में शामिल हो गए हैं। सोशल मीडिया पर अपनी एक्साइटमेंट शेयर करते हुए विवेक ने कहा कि वह इस महत्वाकांक्षी परियोजना का हिस्सा बनकर 'बेहद उत्साहित' हैं। इस प्रोजेक्ट की चर्चा लंबे वक्त से जारी है।

विवेक ने फिल्म की साउंड स्टोरी की अनाउंसमेंट पर रिएक्ट करते हुए लिखा एक ख़राब आदत ही आपको उत्साहित करने के लिए काफी है। यह कितनी ज़बरदस्त 'साउंड-स्टोरी' थी! रेबल स्टार प्रभास को जन्मदिन की शुभकामनाएं! उम्मीद है कि इस सरप्राइज़ ने आपका उत्साह बढ़ाया होगा! अभिनेता के इस पोस्ट ने तुरंत सभी का ध्यान खींचा और फैन्स यह अनुमान लगाने लगे कि वह फिल्म में खलनायक की भूमिका निभा सकते हैं।

हालांकि, उनके किरदार के बारे में अभी कोई जानकारी नहीं है। लेकिन, कई लोग विवेक ओबेरॉय को पहली बार प्रभास के साथ स्क्रीन शेयर करते देखने के लिए उत्साहित हैं। सोशल मीडिया यूजर्स अपने पोस्ट के जरिए विवेक का वेलकम करते हुए नजर आ रहे हैं। वहीं उन्हें फिल्म में देखने के लिए अपनी-अपनी एक्साइटमेंट भी जाहिर कर रहे हैं। प्रभास और विवेक के अलावा फिल्म में तृप्ति डिमरी भी अहम किरदार में नजर आने वाली है।

रियल बॉक्स

परदे पर कुछ अलग ही कलाकार थे असरानी

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

असरानी हिंदी सिनेमा के ऐसे कॉमेडियन थे, जिन्होंने अपने अभिनय जीवन में सहज हास्य और जीवंत संवाद डिलीवरी के जरिए अपनी पहचान बनाई। उनकी अदाकारी केवल फिल्मों तक सीमित नहीं थी। दिल्ली की रामलीला में भी उन्होंने नारद मुनि, रावण के मंत्री जैसे किरदार निभाकर कई बार दर्शकों का दिल जीता। उन्होंने सिर्फ हिंदी के सिनेमा में ही कॉमेडी नहीं की, बल्कि गुजराती, राजस्थानी समेत कई भाषाओं की फिल्मों में काम किया और निर्देशन में भी हाथ आजमाया। लेकिन, उनका 'शोले' का किरदार यादगार बन गया। उस रोल में उनकी खासियत थी, बेहतरीन कॉमिक टाइमिंग रही। असरानी ने अपना अभिनय सिर्फ कॉमेडी तक ही सीमित नहीं रखा, उन्होंने गंभीर और चरित्र भूमिकाएं भी निभाईं, जिससे उनके अभिनय की गहराई और बहुमुखी प्रतिभा दिखाई दी। यहां तक कि उनकी कॉमेडी में भी गहराई और संवेदनशीलता झलकती थी, जो उन्हें हास्य कलाकार नहीं, बल्कि महान कलाकार बनाती थी। असरानी की कॉमेडी सहज और स्वाभाविक होती थी।

वे जोकर या ओवर-द-टॉप से हास्य छिड़कने वाले कलाकार नहीं थे। बल्कि, वे अपनी भूमिका में पूरी तरह डूबकर उस किरदार की नाटकीयता और ह्यूमर को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करते थे। उनकी कॉमेडी हल्के-फुल्के मजाक तक सीमित नहीं थी। उसमें समाज की सच्चाइयों और मानव स्वभाव की कमजोरियों पर भी व्यंग्य छिपा होता था। वे मजाक उड़ाने के बजाए चरित्र की कमजोरियों को समझाने और दर्शाने में दक्ष थे। इसलिए असरानी की कॉमेडी शैली को बहुत नैचुरल, टाइम्ड, विनम्र और सामाजिक-संदेशवाहक माना जाता रहा। इसीलिए उन्हें हिंदी सिनेमा के सबसे प्रतिष्ठित हास्य कलाकारों में से एक माना जाता रहा। उनकी कॉमिक भूमिका जीवन के यथार्थ को व्यंग्य से जोड़ती है, जिससे दर्शक उन्हें केवल हंसाने वाला नहीं, बल्कि सोचने वाला भी पाते थे।

इस कलाकार की डायलॉग डिलीवरी में एक खास रिदम और पंच लाइन होती थी, जो दर्शक को इस तरह गुदगुदाती कि वो हंसने पर मजबूर हो जाता था। उनका अंदाज और संवाद प्रभावशाली होते थे। असरानी ने सिनेमा में सिर्फ कॉमेडी ही नहीं की। उन्होंने निर्देशन की कमान भी संभाली। 1977 में एक सेमी बायोग्राफिकल फिल्म 'चला मुरारी हीरो बनने' बनाई। पर, इस फिल्म को सफलता नहीं मिली। इसके बाद भी उन्होंने हार नहीं मानी। बाद में सलाम मेमसाब, हम नहीं सुधरेंगे, दिल ही तो है और 'उड़ान' फिल्में बनाई। असरानी ने पिया का घर, मेरे अपने, परिचय, बावर्ची, नमक हराम, अचानक, अनहोनी जैसी कई बड़ी फिल्मों में अलग तरह के किरदार निभाए। हालांकि दर्शकों ने उन्हें कॉमेडियन के रोल में ही ज्यादा पसंद किया। 1972 में आई फिल्म 'कोशिश' और 'चैताली' में असरानी ने निगेटिव भूमिकाएं भी की। किंतु, दर्शकों के दिमाग उनकी कॉमिक इमेज ऐसी बनी, जिसे भुलाया नहीं जा सका और यही उनके लिए फायदेमंद भी रहा।

उनकी कॉमेडी में जीवन के व्यंग्य और सामाजिक वास्तविकता झलकती थी, इसलिए उनका हास्य केवल मनोरंजन का माध्यम न होकर समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण रखता था। 'शोले' के जेलर वाले रोल में वे बिना ज़ोर-शोर के भी हंसाने में कामयाब रहे। वे मुखर थे, लेकिन कभी भी कॉमेडी में अधीरता या बेवजह के शोरगुल का सहारा नहीं लिया। उनका अभिनय शालीन और संयमित होने के साथ ऐसा होता था, जो दर्शकों के बीच माहौल को हल्का-फुल्का और दिल खुश करने वाला होता रहा। उनके समकालीन रहे महमूद की कॉमेडी वाले सीन ऊर्जावान और विज़ुअली प्रमोटेड कॉमेडी के लिए जाने जाते थे। इसके अलावा जॉनी लीवर या राजपाल यादव से भी उनकी तुलना की जाए, तो असरानी का अंदाज ज्यादा क्लासिक, रियल और नैचुरल था। उनकी कॉमेडी में कभी फूहड़ता नहीं दिखाई दी। महमूद और असरानी हिंदी सिनेमा के दो अलग-अलग

कॉमेडी स्टाइल के धुरंधर कलाकार थे। जहां महमूद का अंदाज एनर्जेटिक था, वहीं असरानी की कॉमेडी हंसाने के बाद सोचने को भी मजबूर करती थी। इन दोनों कॉमेडियन ने हिंदी फिल्मों में कॉमेडी को नई पहचान दी, लेकिन उनकी शैली और प्रस्तुति के तरीके में काफी अंतर था।

सिनेमा से जुड़ी कोई भी विधा हो, यदि कलाकार में दम हो, तो वो अपने जीवन में कुछ ऐसा अजूबा कर जाता है, जो मील का पत्थर बन जाता है। असरानी ने भी अपने करियर में करीब 350 फिल्मों में काम किया। लेकिन, 'शोले' (1975) में उनके जेलर के किरदार ने उन्हें अलग ही पहचान दी। उनका हिटलर जैसा लुक, छड़ी उठाने का अंदाज और संवाद 'आधे इधर जाओ, आधे इधर जाओ और बाकी हमारे पीछे आओ' कॉमेडी का मास्टरपीस माना जाता है। फिल्म के इस दृश्य को हिंदी सिनेमा के सबसे यादगार कॉमिक सीन में गिना जाता है। फिल्म में अमिताभ बच्चन और धर्मेंद्र की एक्टिंग की जितनी चर्चा हुई, उतनी ही असरानी के जेलर वाले रोल की भी हुई। 'हम अंग्रेजों के जमाने के जेलर हैं' इस डायलॉग ने कोने-कोने में वो गूंज पैदा कर दी थी। जिसने भी असरानी को देखा और सुना वो उनकी तारीफ किए बिना खुद को रोक नहीं सका। कोई विश्वास नहीं करेगा, पर अमिताभ बच्चन की कई फिल्मों में तो असरानी ने बराबरी की रोल निभाए थे। जैसे 'अभिमान' में जिसमें उन्होंने कॉमेडी नहीं की, बल्कि चरित्र अभिनेता का रोल किया था।

फिल्मों में असरानी के डायलॉग सटीक और प्रभावशाली होते थे, जिसकी पंचलाइन इतनी स्वाभाविक होती थी कि बिना कहे भी हंसा देते थे। उनकी कॉमिक टाइमिंग उनकी ह्यूमर की आत्मा थी। हर संवाद और एक्सप्रेशन का समय इतना परफेक्ट होता था कि दर्शक हंसी रोक नहीं पाते। उनकी कॉमेडी केवल मजाक तक सीमित नहीं था, बल्कि सामाजिक और मानवीय कमजोरियों पर व्यंग्यात्मक दृष्टिकोण से भी था, जो सोचने पर मजबूर करता था। उनका ह्यूमर असामान्य नहीं, बल्कि जीवन के नियमित पहलुओं में पूरी तरह प्राकृतिक ढंग से दिखाया जाता था, जो हर वर्ग के दर्शक पसंद करते थे। उनकी एक्टिंग में शारीरिक हाव-भाव, मुंह बनाना और चेहरे के एक्सप्रेशन भी हास्य को और प्रभावी बनाते थे। यही तत्व मिलकर असरानी के ह्यूमर को गहराई, सूक्ष्मता और निरंतरता प्रदान करते थे, जिससे उनकी कॉमेडी आज भी यादगार और असरदार मानी जाती है। चुपके-चुपके (1975) में असरानी का विट्टी और क्लेवर किरदार ऐसा था, जिसने बड़े कलाकारों के बीच अपनी कॉमेडी से अलग पहचान बनाई। धमाल (2007) जैसी फिल्मों में असरानी ने पुलिस इंस्पेक्टर के रूप में कमाल की कॉमेडी की। भूल भुलैया, ऑल द बेस्ट और 'जैसी करनी वैसी भरनी' जैसी फिल्मों में भी असरानी के मजेदार कॉमेडी सीन बहुत लोकप्रिय हैं। कादर खान के साथ असरानी की जोड़ी ने भी कई धमाकेदार कॉमेडी सीन दिए।

गोवर्धन असरानी का जन्म 1941 को जयपुर में हुआ। उनके पिता एक कॉरपेट कंपनी में मैनेजर के पद पर नौकरी करते थे। अपनी पढ़ाई-लिखाई भी उन्होंने यहीं की। लेकिन, उनका झुकाव फिल्मों की तरफ ज्यादा था। उन्होंने पुणे फिल्म इंस्टीट्यूट में दाखिला लेने का मन बनाया और एक्टिंग करने का सोचा और घर से भागकर मुंबई आ गए। उससे पहले उन्होंने दो-तीन साल तक जयपुर आकाशवाणी में काम किया फिर पुणे फिल्म इंस्टीट्यूट में एडमिशन लिया। असरानी जहां एक्टिंग सीख रहे थे, वहीं डायरेक्टर ऋषिकेश मुखर्जी आया करते थे। उनसे असरानी का पहले से परिचय था। ऋषिकेश मुखर्जी की टीम में गुलजार भी थे। उन्हें लगा कि शायद बात बन जाए। उन दिनों ऋषिकेश मुखर्जी फिल्म 'गुड्डी' के लिए जया भादुड़ी को खोज रहे थे। बात आगे बढ़ी, तो ऋषिकेश मुखर्जी ने असरानी को वही रोल दिया, जो वे चाहते थे।

इससे पहले 1967 में असरानी 'हरे कांच की चूड़ियां' फिल्म में एक रोल कर चुके थे। पर, इस फिल्म से असरानी को कोई पहचान नहीं मिली। इसके बाद उन्होंने ऋषिकेश मुखर्जी की 'सत्यकाम' में भी काम किया। उन्हें इंतजार था ऐसी फिल्म का जिससे उनके करियर को दिशा मिले। ये हुआ 'गुड्डी' के साथ। इसके बाद उनके करियर की गाड़ी चल पड़ी। एक के बाद एक फिल्में मिलने लगी। शोर, रास्ते का पत्थर, बावर्ची, सीता और गीता और 'अभिमान' समेत कई फिल्मों में काम किया। खास बात यह कि उनकी एक्टिंग इतनी कमाल थी कि फिल्मकार उनके लिए कोई न कोई रोल लिख ही देते थे। इसके बाद 1975 में असरानी को अपने करियर की सबसे बड़ी फिल्म मिली 'शोले' जिसने उन्हें अंग्रेजों के ज़माने के जेलर की यादगार पहचान देकर उस किरदार को अमर कर दिया।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

राजनीति की तरह ही होते हैं फिल्मी वादे भी

अशोक जोशी

बिहार में चुनावी गर्मी जोरों पर है। इस बार बिहार सरकार ने चुनाव से पहले वादों की बाढ़ सी ला दी। विभिन्न योजनाओं में जमकर पैसा बांटा जा रहा है। तरह तरह के लोकलुभावन वादे किए जा रहे हैं। यदि वादों की बारात निकालने में सत्ता पक्ष माहिर है, तो विपक्ष भी वादों की लम्बी-चौड़ी लिस्ट लेकर वादों की बारात में शामिल हो गया। मतदाताओं को वादों के हिलोरों पर खूब झूला झुलाया जा रहा है। चुनाव की तरह सिल्वर स्क्रीन पर भी नायक, खलनायक से लेकर चरित्र अभिनेता और अभिनेत्रियां फिल्म दर फिल्म वादे करती है। उनके वादों के निभाने या न निभाने के घटनाक्रम से रील दर रील फिल्म आगे खिसकती रहती है।

फिल्म निर्माण और फिल्म के प्रचार प्रसार के दौरान प्रत्येक निर्माता अपने दर्शकों से एक ही वादा करता है कि उनकी फिल्में दर्शकों का भरपूर मनोरंजन करेगी। प्रत्येक हीरो और हीरोइन टीवी पर प्रसारित रिएलिटी शो में हाजिर होकर दर्शकों से यह वादा करते हैं कि यह रोल उनके जीवन का सर्वश्रेष्ठ रोल है और ऐसा रोमांच उन्होंने पहले कभी नहीं देखा होगा। गीतकार से लेकर संगीतकार सभी दर्शकों से तरह तरह के वादे करते है। सभी जानते हैं यह वादे केवल फिल्म प्रदर्शन के पहले वाले गुरुवार तक के ही होते है। शुक्रवार को पहले ही शो से अधिकांश दर्शकों को वादाखिलाफी का अहसास होने लगता है।

जहां तक फिल्मों में वादों से जुड़ी घटनाओं का सवाल है तो फिल्मों की घटना चक्र में वादों का सिलसिला कभी फिल्म के आरंभ में ही शुरू हो जाता है जब एक दोस्त मरते मरते अपने दूसरे दोस्त के नाम अपने बेटे या बेटी हाथ सौंपकर वादा लेता है कि उसके बाद वह बच्चों की देखभाल करेगा। इधर, दोस्त वादा देने वाला दोस्त वादा करता है, उधर वादा लेने वाले दोस्त की गर्दन लुढ़क जाती है। इसी तरह का वादा एक मां दूसरी मां से लेती है और वादा देने वाली माॅ 16 रील की फिल्म में बेटे या बेटी से उसकी सौतेली मां होने की बात छुपाती है। फिल्म की आखिरी रील में अपना वादा तोड़कर खुलासा करती है, कि वह सौतेली मां है। यह बात अलग है कि पहली पंक्ति में बैठे दर्शक से लेकर आखिरी पंक्ति में बैठा हर एक दर्शक इस हकीकत से वाकिफ रहता है।

फिल्मों के विलेन का काम ही वादा करना और तोड़ना होता है। वह कभी भी किसी को भी वायदा देकर फायदा उठा सकता है और वादा खिलाफी कर नायक या नायिका को सड़क पर ला सकता है या नायक की बहन से शादी का वायदा कर उसे गर्भवती बनाकर छोड़ सकता है। तब नायक अपनी बहन से वादा कर फिल्म की कहानी को आगे बढाता है। इस बीच कई ऐसे मौके आते हैं जब नायक की बहन अचानक उस समय परदे पर आती है, जब नायक दुष्ट खलनायक को मारने ही वाला होता है। उसके सीने पर लौटकर नायक की बहन अपने भाई से वायदा लेती है कि वह अपने बहनोई की जान बख्श देगा। क्योंकि, वह जानती है कि इसके बाद ही खलनायक पश्चाताप करता हुआ नायक की बहन को अपना लेगा।

फिल्म का नायक भी वादा करने में पीछे नहीं रहता। वह शहर से गांव आता है। नायिका से प्रेम करता है और किसी काम से जब उसे शहर जाना पड़ता है तो नायिका से वादा करता है कि वह जल्द ही लौटेगा। लेकिन, कभी मां-बाप के दबाव में तो कभी याददाश्त चले जाने पर अपना वादा नहीं निभाता, तब नायिका उसे खोजने शहर आती है और नायक को उसका वादा याद दिलाती है। अक्सर यह फिल्म के क्लाइमेक्स में होता है। नायिका को भी मजबूरी में अपने मरते या रिवाल्वर हाथ में लिए मरने की धमकी देने वाले बाप को वादा करती है कि आज के बाद वह नायक से नहीं मिलेगी।

फिल्मों में कोरे वायदे ही नहीं निभाए जाते। इन वादों के साथ कभी रघुकुल रीत सदा चली आयी, प्राण जाए पर वचन न जाई जैसे डायलॉग सुनने को मिलते हैं। वादा देने और निभाने के लिए जो गीत बने हैं उनमें जो वादा किया वो निभाना पड़ेगा, वादा तेरा वादा, वादे की शाम है वादा निभाना, ये वादा करो चांद के सामने, वादा करो नहीं छोड़ोगी तुम मेरा साथ, कस्मे वादे निभाएंगे हम, कस्मे वादे प्यार वफा सब बातें हैं बातों का क्या? वादा न तोड़, वादा करले साजना, वादा करो जानम, तुम अगर साथ देने का वादा करो, क्या हुआ तेरा वादा और वादा रहा सनम दर्शकों को वादे की महिमा सुनाते रहते हैं। वादा एक अचूक फिल्मी नुस्खा है, जिसके दम पर दर्शकों को आकर्षित किया जाता रहा है। इसी वादे की खातिर ये वादा रहा, वादा,क्या हुआ तेरा वादा, कस्मे वादे, वचन और प्राण जाए पर वचन न जाए जैसे टाइटल रखे गए है।

... जैसे गधे के सिर से सींग !

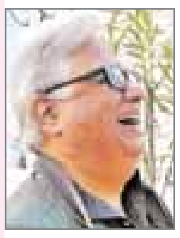

प्रकाश पुरोहित

फिल्मी गीत है तो गंभीरता से लेने की जरूरत नहीं है, 'मेरा गधा, गधों का लीडर कहता है दिल्ली जाकर (मेहरबान-1968, गीतकार राजेंद्र कृष्ण)।' यह कोई आज का गीत नहीं है, करीब पचास साल से बज रहा है। यह कल्पना ही मजेदार और अविश्वसनीय है कि गधों में भी कोई गधा लीडर हो सकता है। भेड़ों में तो ऐसी रिवायत रही है कि किसी एक को आगे कर दो तो बाकी भी पीछे-पीछे चल देती हैं, फिर आगे वाली भले ही खाई में गिर रही हो, लेकिन गधे तो 'एकला चलो रे' का राग अलापता है! जितना गधे पर मिल जाता है। कहते हैं गधे का वजूद करीब सात हजार साल से है। भारत और चीन में सबसे ज्यादा पाए जाते हैं। चीन में गधों की आबादी कम होने की बड़ी वजह यह बताई जा रही है कि वहां सौंदर्य-प्रसाधन में गधों की हड्डियों का उपयोग किया जाता है। इसके पीछे कहानी यह है कि महारानी को यह भ्रम था कि गधी के दूध से नहाने से उम्र नहीं नजर आती, चेहरे पर शिकन यानी झुर्रियां नहीं पड़तीं और चमड़ी चमकदार होती है। भारत में भी गधी का एक लीटर दूध, गौमाता के माह भर के बिल से महंगा मिलता है। रावण के दस सिर में यदि गधे का नहीं हो तो अधूरा लगता है या नहीं!

खबर है कि मध्यप्रदेश में सिर्फ छह फीसद ही गधे बचे हैं। कभी आधा लाख थे और आज सिंगल डिजिट हजार में ही हैं। पहली बात तो यही कि मध्यप्रदेश में ही इतने ज्यादा गधे क्यों रहे? क्या यहां की आबोहवा इनके मिजाज की है या इन्हें यहां अपनापन लगता

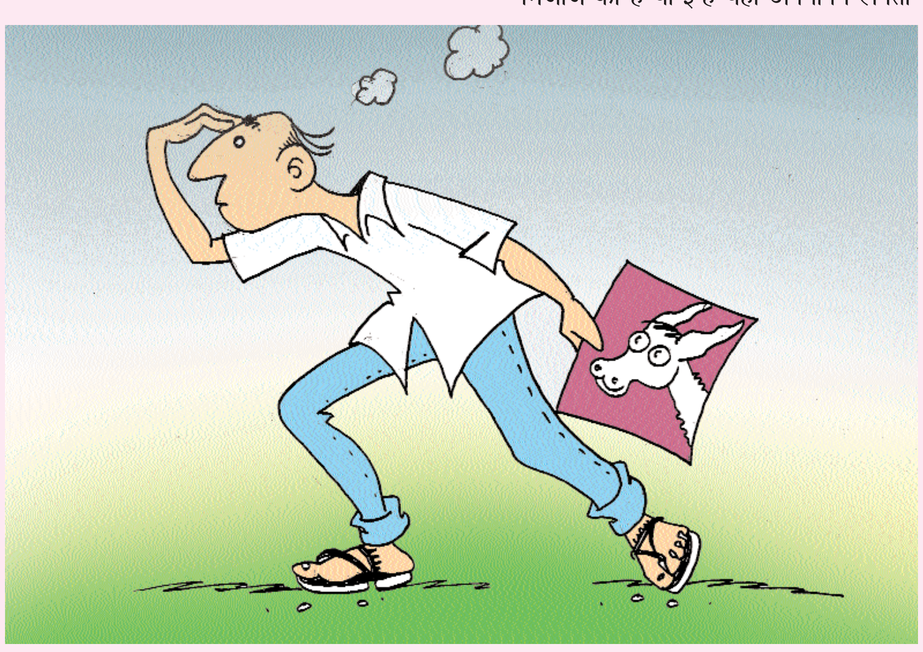

गधा आमतौर पर गरीबों का पशु है, इसलिए उसे भी गरीब जानवर ही कहा जाता है। धोबी का गधा... घर का ना घाट का! अब ना घाट रहे, ना वैसे धोबी रहे तो लादने के लिए गधे की भी क्या जरूरत! कुम्हार और गधे की भी जोड़ी रही है... कि गधा ही है, जो मिट्टी के बर्तनों की नजाकत समझता है और पीठ पर यूं लादे चलता है, जैसे मां की गोद में बच्चा! कभी देखा है किसी कुम्हार को बैलगाड़ी पर मटके ले जाते! जब कुम्हार ही नहीं रहे तो गधे क्या करें। कभी कुम्हार मोहल्ला (कुम्हारखाड़ी-इंदौर) हुआ करता था, अब कुम्हार मिलना ही मुश्किल है।

जब भी किसी को कमअक्ल, नासमझ, सीधी-सादा या मेहनती समझते हैं तो 'गधा' ही कहते या समझते हैं। गधा-हम्माली शब्द भी शायद इसी से निकला होगा कि मेहनत खूब और बदले में कुछ नहीं। यह शालीन-अपशब्द की तरह मनुष्य के लिए उपयोग किया जाता है कि ना कहने वाले को अफसोस होता है और ना सुनने वाले को बुरा लगता है। जो मन लगा कर काम करे, चूं-चपड़ न करे और जो कभी गुस्सा न दिलाए, गधा ही हो सकता है!

दरअसल, हमारे पास गरियाने के लिए या तो अश्लील गालियां हैं या गधा... या ऐसे ही पशु-पक्षी। कृष्ण चंदर ने कभी 'एक गधे की आत्मकथा' लिखी थी और इस कदर चल निकली थी कि गधों पर पूरी सीरीज ही लिख डाली थी। उपलब्ध साहित्य में किसी पशु पर इतना लेखन मौजूद नहीं है, है? नर्मदा(किनारे)पुरम में सबसे ज्यादा तो भोपाल में सिर्फ साठ ही बचे हैं।

क्या होड़ यानी कांपीटिशन की वजह से इतने कम रह गए या कि भोपाल छोड़ दिल्ली चले गए? ऐसा भी कोई रिकार्ड नहीं मिलता है। दिल्ली तो शायद वैसे ही आत्मनिर्भर है कि उसे यहां मालवा के गधों की क्या दरकार! वैसे वहां तो पूरे देश से आते रहते होंगे, मध्यप्रदेश के भरोसे तो बैठे नहीं होंगे! कहीं ऐसा तो नहीं है कि गाय को मिल रही महत्ता की वजह से गधों का मोह भंग हो गया हो, लेकिन 'गाय हमारी माता है' ऐसा तो वह भी कहने से बाज नहीं आता, जिसको कुछ नहीं आता है! कभी उज्जैन के कार्तिक मेले में गधों का जबर्दस्त कुंभ लगता था और दूर-दूर से खरीदार आते थे। शायद मध्यप्रदेश ने सिर्फ गधे बेचे हों और उनकी पैदावार पर जोर ना दिया हो। कहते हैं ना कि बैठे-बैठे खाने से तो कारूं का खजाना भी खाली हो जाता है तो फिर ये तो गधों का मामला है, खाली होना ही था!

डर है आने वाले समय में पारंपरिक बाप कभी तैश में आकर औलाद को 'गधा' कह दे... तो चिरंजीव पूछ बैठे क्या हमारे पुरखे थे? ऐसी हालत से बचना है तो गाय के साथ गधों की भी देखभाल जरूरी है। जब जो खत्म किया है हमने, उसे अब बचाने में लगे हैं तो फिर 'गधों' के लिए क्या कोई समझदार आगे आएगा कि 'गधे बचाना है...।'

...और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखक साहित्यकार हैं।

लिव इनः परंपरा और आधुनिकता के बीच रिश्ते की राह

मेरे मन में कौतुहल था समान लिंग वाले भी लिव-इन में रहते हैं? भारत के उच्चतम न्यायालय ने यह घोषित किया कि लिव-इन संबंध केवल विपरीत लिंग के अविवाहित व्यक्तियों के बीच संभव है। मैंने कानूनी सलाहकार दिनेश नायक से जानना चाहा कि ऐसे संबंधों से उपजे बच्चों का भविष्य क्या होता है अगर पार्टनर्स की आपस में लड़ाई हो जाये। लिव-इन से होने वाले बच्चों को जायज माना गया है, वे अपने माता-पिता की किसी भी जायदाद का उत्तराधिकार प्राप्त कर सकते हैं। परंतु इसमें खानदानी जायदाद का हिस्सा नहीं मिलता। ये भी न्यायालय ने घोषित किया था कि ये एक ऐसा रिश्ता है जिसे प्रतिदिन नवीकृत किया जाता है। इसे किसी भी पक्ष द्वारा दूसरे पक्ष की सहमति के बिना समाप्त किया जा सकता है और एक पक्ष किसी भी समय बाहर निकल सकता है। न्यायालय ने ये भी शर्तें बताई हैं कि दोनों विवाह की कानूनी उम्र में हों (हालांकि इस पर अभी विरोधाभासिक कानून आया है।) केवल एक रात गुजारने को घरेलू संबंध नहीं माना जा सकता। लिव-इन जोड़े को भी समाज के आगे पति पत्नी जैसे संबंधधारियों के रूप में प्रस्तुत करना चाहिये। यदि कोई पुरूष के पास कोई रखैल हो या नौकरानी जिसके उसके साथ अवैध संबंध हो तो इसे विवाह के भाव के संबंध नहीं माने जा सकते।

बीते कुछ समय से चर्चा में आए लिव इन रिलेशनशिप पर बात करते हैं। बात की शुरुआत में ही इसका मतलब समझ लिया जाए। इसका मतलब होता है विवाह किये बिना एक दूसरे के साथ रहना। इसे हिंदी में 'सहजीवन संबंध' भी कहते हैं। इसमें पति-पत्नी की तरह संबंध भी बनाते हैं। यह संबंध पूरा स्नेह या शारीरिक आकर्षण पर टिका रहता है, ये हम नहीं बता सकते। धोखेबाजी, बोरियत, लंबे समय रहने से होने वाले लड़ाई-झगड़े इसे अस्थाई भी बना देते हैं। पर कई बार विवाह भी हो जाता है।

वैसे तो पश्चिमी देशों में ये प्रथा बहुत पहले प्रारंभ हो चुकी है पर अब भारत में घर से दूर जॉब में रहते हुए बहुत कपल मिल जायेंगे। पहले हमारे देश में इसकी कानूनी मान्यता नहीं थी पर अब कानून में ढील दी गई है। हालांकि भारत के सर्वोच्च न्यायालय में लिव-इन संबंधों के सर्मथन में एक ऐतिहासिक निर्णय सुनाते हुए कहा है कि यदि दो लोग लंबे समय से एक दूसरे के साथ रह रहे हैं और उनमें संबंध है तो उन्हें शादी शुदा ही माना जायेगा। ये संबंध मूलतः शहरों में ही देखे गए हैं, गांवों में नहीं। मुंबई जैसे शहरों में तो मैरिज ब्यूरों की तरह विशेष रूप से लिव-इन संबंधों के बनाने में सहायता करने वाले लोग और संस्थायें मौजूद हैं।

मेरे मन में कौतुहल था समान लिंग वाले भी लिव-इन में रहते हैं? भारत के उच्चतम न्यायालय ने यह घोषित किया कि लिव-इन संबंध केवल विपरीत लिंग के अविवाहित व्यक्तियों के बीच संभव है। मैंने कानूनी सलाहकार दिनेश नायक से जानना चाहा कि ऐसे संबंधों से उपजे बच्चों का भविष्य क्या होता है अगर पार्टनर्स की आपस में लड़ाई हो जाये। लिव-इन से होने वाले बच्चों को जायज माना गया है, वे अपने माता-पिता की किसी भी जायदाद का उत्तराधिकार प्राप्त कर सकते हैं। परंतु इसमें खानदानी जायदाद का हिस्सा नहीं मिलता। ये भी न्यायालय ने घोषित किया था कि ये एक ऐसा रिश्ता है जिसे प्रतिदिन नवीकृत किया जाता है। इसे किसी भी पक्ष द्वारा दूसरे पक्ष की सहमति के बिना समाप्त किया जा सकता है और एक पक्ष किसी भी समय बाहर निकल सकता है। न्यायालय ने ये भी शर्तें बताई हैं कि दोनों

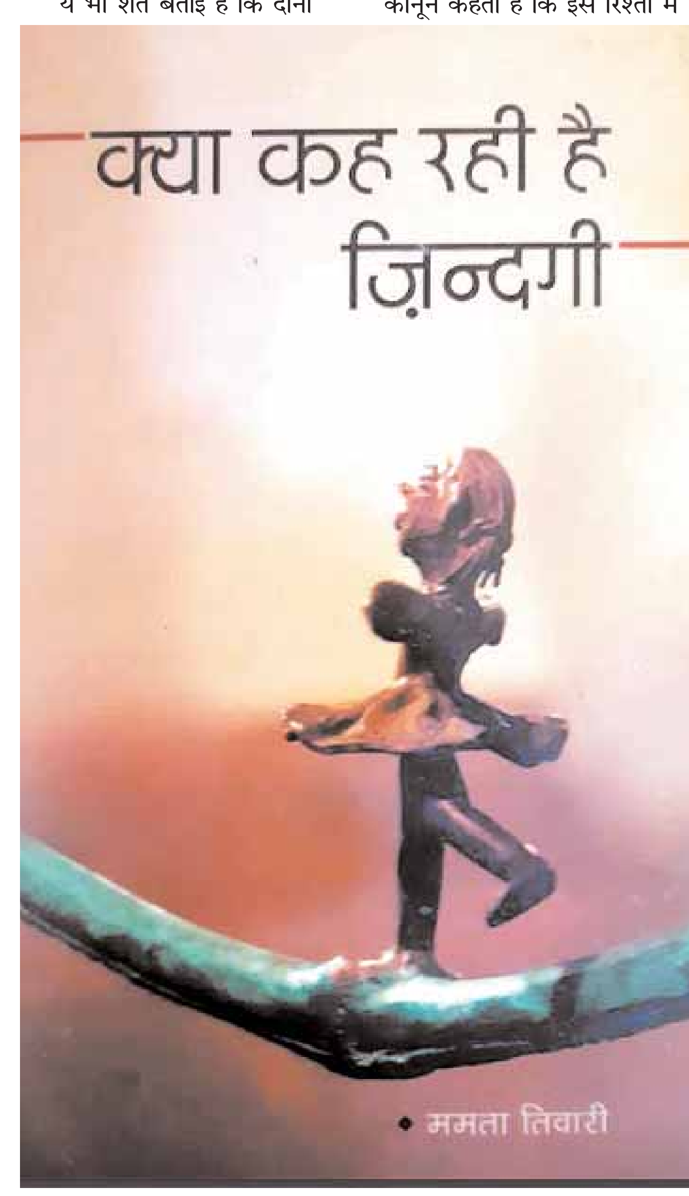

विवाह की कानूनी उम्र में हों (हालांकि इस पर अभी विरोधाभासिक कानून आया है।) केवल एक रात गुजारने को घरेलू संबंध नहीं माना जा सकता। लिव-इन जोड़े को भी समाज के आगे पति पत्नी जैसे संबंधधारियों के रूप में प्रस्तुत करना चाहिये। यदि कोई पुरूष के पास कोई रखैल हो या नौकरानी जिसके उसके साथ अवैध संबंध हो तो इसे विवाह के भाव के संबंध नहीं माने जा सकते।

अब ऐसे रिश्ते से लाभ क्या है? ये कि साथी को पूर्ण जानने में आसानी होती है। अब तो सगाई किये जोड़े भी साथ रहके देखते हैं। माता पिता ने भी हथियार डाल दिये हैं। अब हमारे देश में दैहिक संबंधों और वर्जिनिटी का टैबू भी टूट गया।

कानून कहता है कि इस रिश्तों में पारिवारिक और सामाजिक नियम लागू नहीं होते हैं। वैवाहिक जीवन की जवाबदारी इस रिश्ते पर लागू नहीं होती। संबंध खत्म होने पर तलाक जैसा झंझट नहीं होता पर अगर बच्चे हो जाते हैं तो अधिकार के लिये कोर्ट जाया जा सकते हैं।

अब इस तरह के संबंधों के ड्राबैक समझते हैं। एक तो समाज से ऐसे रिश्ते स्वीकार नहीं किए जाते और तिरस्कार भी मिलता है। संबंध टूटने पर स्त्रियों को आगे बढ़ने व समाज की स्वीकृति मिलने में दिक्कत होती है। इस रिश्ते से पैदा हुए बच्चों को सर्वाइव करने में दिक्कत होती है। बच्चों का रिश्तों व विवाह से विश्वास उठ जाता है। हमेशा अविश्वास, असुरक्षा और धोखेबाजी से भरा रहता है ऐसा रिश्ता। इसलिये खुशी रहना थोड़ा कठिन हो जाता है। कुछ लिव-इन पार्टनर के ब्रेकअप के बाद वो एक दूसरे का मुँह नहीं देखना चाहते उनका विवाह से विश्वास उठ जाता है।

चलते चलते -

हाल ही में उत्तराखंड से समाचार आया कि यूसीसी के नए नियमों में लिव-इन में रहने वालों की जांच व निगरानी नहीं होगी। पांच नियम हैं जो बदलने की तैयारी चल रही है (भास्कर से साभार) कि

(1) नहीं पूछा जाएगा कि व्यक्ति तलाकशुदा है या पहले लिव-इन में रह चुका है या नहीं।

(2) गर्भवती होने या संबंध समाप्ति के बाद बच्चे के जन्म की सूचना देना अनिवार्य नहीं।

(3) रजिस्ट्रार केवल सीमित उपयोग के लिये फोन नंबर ई-मेल या पता रख सकेगा।

(4) लिव-इन पंजीकरण में किसी व्यक्ति के अन्य गुप्त संबंधों की गुप्त जांच नहीं होगी।

(5) विवाह पंजीकरण के लिये आधार कार्ड की बाध्यता भी ख़त्म होगी।

7 मार्च 2024 को उत्तराखंड में यूसीसी लागू होने पर 4 लाख से अधिक लोग विवाह पंजीकरण करा चुके हैं। 284 तलाक हुए हैं। 58 लोगों ने लिव-इन संबंध दर्ज कराए। एक जोड़े ने लिव-इन तोड़ा। ये जानकारियां उन जोड़ों की है जिन्होंने पंजीकरण कराया पर बहुधा लोग लिव-इन छुपाते हैं।

ऐसा कानून बनाने का कारण क्या है? लोग उच्छृंखल भी हो सकते हैं क्योंकि कई जोड़ों ने कहा पुलिस को सूचना देना निजता का हनन है सरकार परंपरा, आधुनिकता, व्यक्तिगत स्वतंत्रता में संतुलन बनाना चाहती है और बताना चाहती है यूसीसी कोई 'कठोर' कानून नहीं है बल्कि समानता और न्याय पर आधारित एक सुधार है। तो सबको 'लिव-इन' शेयर करें और पूछे, और क्या कह रही है जिंदगी?

❐ यूके से
प्रज्ञा मिश्रा

पुरानी किताब के पन्ने पलटते हुए !

'सैफरन किंगडम' की कहानी उन सारी कहानियों का निचोड़ है, जो अरफात ने अमेरिका, कनाडा में कश्मीरी लोगों से सुनी। कश्मीर की तीन पीढ़ियों के सहारे बात की कोशिश अरफात ने की है। यहां गोलियों की आवाज आती है। कभी-कभार खून दिखाई देता है, लेकिन दहशत परदे पर फिल्म देखने वालों को महसूस होती है। परिवार के अनुभव को कैमरे की नजर से दिखाने की कोशिश है, लेकिन यह किसी भी कश्मीरी परिवार की कहानी हो सकती है, जो अब नहीं बचे, लापता और उन लोगों की कहानी, जिन्हें याद रखना बाकी है। अरफात शेख को फिल्म की शूटिंग जॉर्जिया में करनी पड़ी और इसलिए कलाकार चुनने में दिक्कतें पेश आई।चाहते थे कि सभी कलाकार कश्मीरी हों, लेकिन यह मुमकिन नहीं था।

नई आलमारी में किताबें जमाने के दौरान कई ढेरों यादें ताजा हुईं। पता चला कि कितनी किताबें हैं, जिनकी दो प्रतियां हैं। कुछ किताबें यूं हस्ताक्षर सहित दी हैं, जैसे गिफ्ट की हों, जबकि पूरे होशोहवास में खास दिन खरीदी थीं। मुफलिसी में ऐसी ख़सी शायद ही भुला पाए (यूके में किताब खरीदना आमतौर पर ख़सी ही लगती हैं, खास कर तब, जब उन किताबों की कीमत भारत में पता हो)। कुछ किताबें हैं, जो कहां से आईं, कुछ याद नहीं।

किताबें खरीदने वाले अलग होते हैं। उनके पास हमेशा अंबार लगा होता है, लेकिन कुछ ऐसी भी हैं, जिन्हें तोहफे के तौर पर दिया है। मसला यह था कि देने वाले को लगा कि यह किताब पसंद आएगी, लेकिन कुछ इतनी बकवास निकलीं कि दो पन्नों से आगे बढ़ ही नहीं पाए और भूल भी गए।

स्कूल और कॉलेज की पुरानी किताबों को इंदौर के खजूरी बाजार में देना नियम था। यूके में भी कई चैरिटी शॉप्स हैं, जहां पुरानी किताबें मिलती हैं। आजकल तो किताबों की दुकान में ऐसा कोना मिल जाता है, जहां पुरानी मुफ्त या कम दाम में मिल जाती हैं। लंदन में सॉउथबैंक से लेकर कोवेंट गार्डन तक ऐसी कई पुरानी किताबें मिल जाती हैं और कद्रदान खोजते पहुंच ही जाते हैं। मुंबई में ऐसी ही पुरानी दुकान पर कवि बोधिसत्व को किताब मिली। उस पर जो लिखा है, उससे मालूम होता है कि इसे लेखक ने कलाकार नसीरुद्दीन शाह को भेंट किया होगा। बोधिसत्व इस बात से नाराज हो गए कि नसीरुद्दीन शाह ने कुछ

पैसों के लिए किताब को कबाड़ी को बेच दी।

पहले तो इस बात की खातरी करना चाहिए थी कि क्या वाकई में इसे कबाड़ी को बेचा गया है या नहीं! क्या यह मुमकिन नहीं है कि किसी ने इस पर यूं ही लिख दिया हो और नसीरुद्दीन शाह को कोसने का सिलसिला चल पड़ा हो। अगर इसे वाकई लेखक ने भेंट किया भी हो तो इस बात गारंटी कोई नहीं ले सकता कि आखिर इसे कबाड़ी को उनके घर से ही भेजा गया हो. क्या यह मुमकिन नहीं है कि कोई इसे पढ़ने के लिए ले गया हो और इसे लौटाने के बजाय सेकंड हैंड बुक शॉप को दे दिया हो।

कहने का मतलब यह है कि बिना यह जाने कि वजह क्या थी, बेबुनियाद तरीके से किसी को गलत मान लेना भी गलत है, लेकिन अगर कोई कवि, लेखक ऐसी बात करता है तो कोई समझदारी नहीं है। अगर ऐसी कोई किताब मिलती भी है तो खुश हों कि नायाब गिफ्ट हाथ लगा। किताबें पढ़ने-संजोने के लिए हैं, लेकिन अगर इन्हें संभाल न सकें और ऐसी दुकानों तक भी इन्हें पहुंचा दें तो भी बड़ी बात है।